नवम्बर-२०२३ ◆ वर्ष १२ ◆ अंक ०७ ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

नवम्बर-२०२३

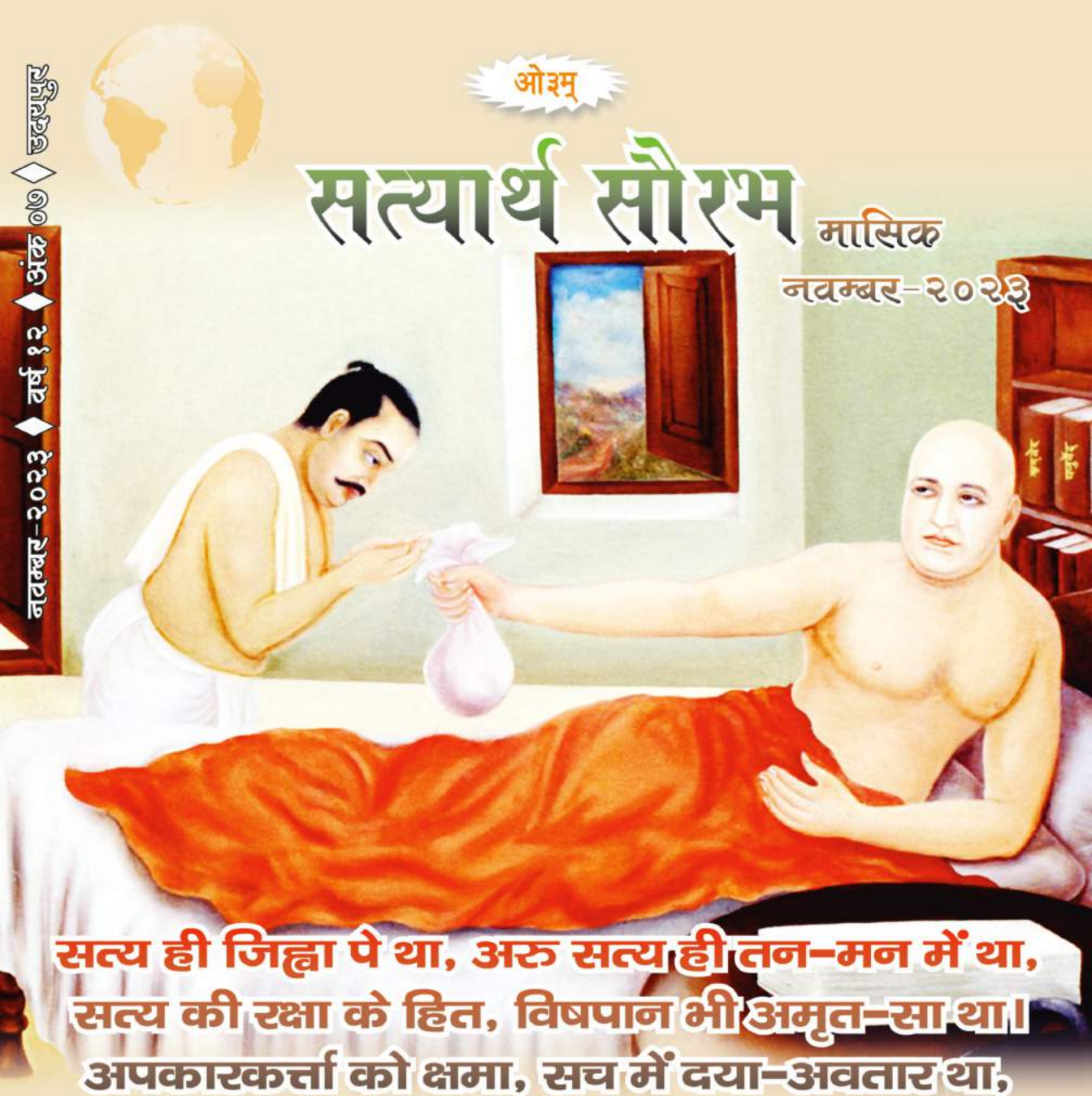

सत्य ही जिह्वा पे था, अरु सत्य ही तन-मन में था,
सत्य की रक्षा के हित, विषपान भी अमृत-सा था।
अपकारकर्त्ता को क्षमा, सच में दया-अवतार था,
देशहित बलिदानकर्त्ता, सच में वही ऋषिराज था।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹१५ १४५

सफलता के 6 मूल मंत्र

महाशय धर्मपाल गुलाटी
संस्थापक चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

महाशय राजीव गुलाटी
चेयरमैन, महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लि०

MDH
मसाले
सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमाँसक

आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय

डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

डॉ.सोमदेव शास्त्री

डॉ. रघुवीर वेदालंकार

आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)

नवनीत आर्य (मो. 9314535379)

व्यवस्थापक

भँवर लाल गर्ग

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	11000 रु.	$ 1250
आजीवन	1500 रु.	$ 300
पंचवर्षीय	600 रु.	$ 125
वार्षिक	150 रु.	$ 30
एक प्रति	15 रु.	$ 10

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२४
कार्तिक कृष्ण दशमी
विक्रम संवत्
२०८०
दयानन्दाब्द
१९९

November - 2023

क्या सनातन ०७ मच्छर या एड्स है?

१९ वेदों में विज्ञान के उद्घोषक

समाचार २१
हलचल ३०

०४	वेद सुधा
०६	सत्यार्थ मित्र बनें
१४	हैदराबाद मुक्ति संग्राम
१७	महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार
२२	ब्रह्म मुहूर्त में उठे विचार
२३	रामायण को जानिये
२५	स्वास्थ्य-बादाम
२७	कथा सरित- कहानी दयानन्द की
२८	कविता-महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नही है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 5000 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	3000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.

स्वामी श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर | वर्ष - १२ | अंक -०७ | द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर **मुद्रण**

प्रकाशक
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक– मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

प्रार्थना का स्वरुप

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।। -ऋग्वेद ३०/३

यजुर्वेद के इस मंत्र का अर्थ है- **हे! सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिये। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव है वह हम सबको प्राप्त कराइये।**

यहाँ हम सबके कल्याण की प्रार्थना है, केवल स्वयं के लिए नहीं है। वेदों में जो ज्ञान है, वह संसार के सभी मानवमात्र के लिये है। वेदों के ओ३म् का मन की श्रेष्ठता की ओर संकेत है। **ओ३म् अर्थात् अ, उ, म्– अ, उर्ध्व मस्तिष्क है, उ मध्य हृदय है और म् अन्त नाभि।** तीनों का सम्बन्ध हमारी स्वर तालिका से है, लेकिन तीनों में श्रेष्ठ मध्य या हृदय है। वही ओ३म् को उच्चारित करने के लिए वायु देता है। यह आदि ज्ञान अनुभव के उन क्षणों में मिला था, जब मनुष्य अनुभव शून्य था। उसकी निरन्तर सत्यता उसके शाश्वत होने का संकेत है, जिस तरह सूर्य का उदय हुआ है या नहीं, यह बात कहकर बताई नहीं जाती है। प्रकाश और गर्मी स्वयं इस बात का परिचय देते हैं कि सूर्योदय हो गया है।

स्तुति, प्रार्थना और उपासना तीनों में ईश्वरोपासना का स्वरूप सम्पूर्ण होता है। प्रार्थना है क्या? मनीषियों ने कहा है- इष्टदेव के सम्मुख अन्तरात्मा से सहज और सच्चे रूप से निकले उद्गार ही सच्ची प्रार्थना है, न कि रटे हुए वाक्य, श्लोक और मन्त्र। प्रार्थना अर्थात् अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर से सहायता की याचना करना। प्रार्थी भक्त का यह दृढ़ निश्चय है कि ईश्वर उसके सभी शुभ कर्मों में परम सहायक बने रहते हैं। उसे अपने कर्मों की सिद्धि में एक उसी का अनुभव होता है और विफलता में भी निराशा नहीं होती, इसलिए उत्साह कभी क्षीण नहीं होता, अपितु बढ़ता है-

हे ईश्वर दयानिधे भवत्कृपयाऽनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।।

अर्थात्- हे ईश्वर। दया के सागर प्रभो! आप की अपार कृपा से मैं नित्य जप, उपासना आदि कर्मों के द्वारा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र से शीघ्र सिद्धि पा सकूँ। आप हमारी कामना पूर्ण कीजिये।

अन्तर की अकुलाहट को प्रभु के समक्ष प्रकट कर देना ही तो प्रार्थना है, इसलिए प्रार्थना में शब्दों का नहीं, भाव का महत्त्व है। शब्द स्थूल जगत् में सम्पर्क का माध्यम है, परमात्मा से जुड़ना हो तो भाव चाहिये। समर्पण भाव में भक्त और भगवान एक हो जाते हैं। हम प्रार्थना अकसर कब करते हैं, जब विकट समस्या या दुःख घेर लेता है। सन्त कबीरदास कहते हैं-

दुःख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुःख काहे को होय।।

जीवन में दो अवसर ऐसे होते हैं जब किसी भी नास्तिक या आस्तिक को ईश्वर या किसी अज्ञात परम शक्ति पर विश्वास करने के लिए विवश होना पड़ता है। एक घनघोर दुःख की स्थिति में और दूसरा दुःख के बाद सुख के समय पर। ये दोनों अनुभवगम्य स्थितियाँ सबके जीवन में आती हैं।

एक किसान ने बहुत परिश्रम कर करके फसल पैदा की। अपनी लहलहाती खेती को देखकर वह खुशी से सोच रहा था- अब इस अनाज को बेचकर मैं अपनी बेटी की शादी करूँगा। अचानक ही स्वच्छ आकाश में बादल छाने लगे और वर्षा के साथ-साथ ओले भी बरसने लगे, देखते ही देखते उसकी सारी फसल नष्ट हो गई। कोई तो शक्ति है, जो परोसी थाली को खाने के पहले ही खींच लेती है। हमारे मन में कुछ होता है और विधाता के कुछ और। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बड़ी से बड़ी विपत्ति में भी कोई हाथ हमें बचा लेता है और तब हमारे मुँह से अचानक यह निकालता है कि मारने वाले से बचाने वाले के हाथ लम्बे होते हैं।

किसी जंगल में एक कबूतर और कबूतरी एक वृक्ष पर अपने घोसले में खुशी से प्रेमलाप कर रहे थे। अचानक कबूतरी की नजर वृक्ष के नीचे खड़े एक शिकारी पर पड़ी, जो उनकी ओर निशाना लगा रहा था। यह देखकर कबूतर ने कहा- अरे मत घबरा, हमारे पास ऐसे पंख हैं कि आकाश में बहुत ऊपर उड़ जाएँगे, जहाँ इसका तीर भी नहीं पहुँच पाएगा। जैसे ही उसने ऊपर आकाश में देखा एक बाज उनके आस-पास मंडरा रहा था कि जैसे ही वे घोसले से बाहर निकले, वह उन पर झपटकर

उनका शिकार कर ले। नीचे ऊपर दोनों जगह मृत्यु को देखकर कबूतर और कबूतरी आँखे बन्द कर बैठ गए कि अब तो मृत्यु निश्चित ही है। जब थोड़ी देर कुछ नहीं हुआ तो उन्होंने आँखे खोलकर जो दृश्य देखा वह आश्चर्यजनक था, वहाँ बाज और शिकारी दोनों मरे पड़े थे। हुआ यह कि जब शिकारी निशाना लगा रहा था, तब एक साँप वहाँ से जा रहा था। शिकारी का ध्यान निशाने पर था, इसलिए नीचे से जाते हुए साँप पर उसका पैर पड़ गया और साँप ने उसे काट लिया। साँप के डसने से शिकारी का हाथ हिल गया और तीर का निशाना चूक कर उड़ते हुए बाज को लग गया। बाज मर गया और शिकारी भी, कबूतर और कबूतरी के दोनों संकट दूर हो गए। कोई शक्ति तो है जो संकट के क्षणों में रक्षा करती है।

प्रभु भक्ति से क्रोध, चिन्ता और बुढ़ापा भी दूर रहते हैं और विवेक, शान्ति और स्वास्थ्य निकट आकर रहने लगते हैं। एक बार किसी भक्त को रास्ते में बिखरे हुए बालों वाला मोटा व्यक्ति मिला। उसने पूछा- तुम कौन हो? उत्तर मिला- मैं क्रोध हूँ। कहाँ रहते हो? मानव के मष्तिक में रहता हूँ। भक्त आगे बढ़ा तो एक स्त्री उदास, दुबली-पतली, मुँह लटकाए चली जा रही थी। उसने पूछा- तुम कौन हो? स्त्री ने कहा- मैं चिन्ता हूँ, मन में रहती हूँ। वह आगे चला तो एक व्यक्ति मिला, झुर्रियों वाला, दुबला-पतला, जिसकी कमर झुकी हुई थी। उसने भी उत्तर दिया कि- मैं बुढ़ापा हूँ, शरीर में रहता हूँ। और आगे जाने पर एक व्यक्ति मिला, सौम्य, शान्त। पूछा- तुम कौन हो भाई? उसने कहा- मैं विवेक हूँ, मानव के मस्तिष्क में रहता हूँ। पर वहाँ तो क्रोध रहता है। हाँ, जब क्रोध रहता है, तब मैं नहीं रहता। आगे एक नारी मिली, सौम्य सुन्दर और शान्त। वह बोली- मैं शान्ति हूँ, मन में रहती हूँ। पर वहाँ तो चिन्ता रहती है। हाँ, जब चिन्ता रहती है, तब मैं नहीं रहती, जब मैं वहाँ रहती हूँ, तो चिन्ता गायब हो जाती है। पर हाँ, मैं रहती प्रभु भक्तों के मन में ही हूँ। आगे चलकर एक स्वस्थ्य, सुन्दर, तेजस्वी व्यक्ति मिला। उससे पूछने पर वह बोला- मैं स्वास्थ्य हूँ, और शरीर में रहता हूँ। पर वहाँ तो बुढ़ापा रहता है। जब बुढ़ापा आता है तब मैं नहीं रहता, लेकिन, मैं केवल प्रभु भक्तों में ही रहता हूँ।

कहने का तात्पर्य यह है कि प्रार्थना वास्तव में केवल श्रेष्ठता के लिए होनी चाहिए। हम श्रेष्ठ और सन्मार्गी बनें, दूसरों की सेवा, सहायता कर सकें और अपने साथ उन्हें भी ऊँचा उठा सकें। प्रार्थना का सबसे सुन्दर रूप समर्पण-योग है। हम अपने जीवन को परमात्मा के चरणों में समर्पित कर दें। उनकी इच्छा आकांक्षा को ही अपनी इच्छा आकांक्षा मानें। किसी विद्वान् ने सच कहा है- प्रार्थना करने वाला प्रभु की महान् प्रसन्नता का अधिकारी होता है। ऐसा कौन-सा शुभ कार्य है जो प्रभु की प्रसन्नता से सफल नहीं होता?

अदन के बादशाह के दरबार में शेख सादी एक सन्त विचारक थे। एक बार किसी दरबारी से प्रसन्न होकर बादशाह ने उसे कुछ जागीर ईनाम में दे दी। शेख सादी यह सुनकर फूट-फूट कर रोने लगे। दरबारी ने कहा- इतने बड़े विचारक होकर भी तुम रो रहे हो? वह जागीर तुम ले लो। शेख सादी ने कहा- अरे मूर्ख! मैं इसलिये नहीं रोया कि वह जागीर तुम्हें मिली है, रोना मुझे इस बात पर आया कि इतने छोटे बादशाह को खुश करके इतनी बड़ी जागीर मिल सकती है, तो बादशाह के बादशाह उस खुदा को खुश किया होता तो दोनों जहान की दौलत मिल जाती।

कहने का तात्पर्य है कि हम भौतिक जीवन में आगे बढ़ने के लिये प्रयास और पुरुषार्थ तो करें, पर उससे मिलने वाली सफलता, असफलता को ईश्वरीय इच्छा मानकर चलें। पलभर की प्रार्थना अगर हृदय से की जाय तो पर्याप्त है, ईश्वर को लुभाने के लिए लम्बी प्रार्थना की आवश्यकता नहीं होती।

वेदों में जो प्रार्थनाओं का स्वरूप है, उन भावनाओं को सीखकर हम निःस्वार्थ भाव से मानवमात्र के कल्याण को प्राथमिकता दें तो हमें स्वयं आत्म संतोष मिलेगा और सम्पूर्ण देश, समाज व प्राणीमात्र को भी लाभ मिलेगा।

लेखिका- डॉ. रोचना भारती

साभार- अमृत-मन्थन

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
09314535379

पाठकों के पास 'सत्यार्थ सौरभ' डाक विभाग की अव्यवस्था के कारण अनेक बार समय पर नहीं पहुँच पाती है। पाठक न्यास को ही दोषी मानते हैं, जिसे अनुचित भी नहीं कहा जा सकता। परन्तु वास्तविकता है कि यहाँ से प्रत्येक माह की 7 तारीख को पत्रिका प्रेषित कर दी जाती है। पश्चात् सब कुछ डाक विभाग की कृपा पर निर्भर करता है। फिर भी आपसे निवेदन है कि प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

सत्यार्थ मित्र बनें

न्यास के कार्यों को गति प्रदान करने के लिए 5100 रु. (पाँच हजार एक सौ) वार्षिक का सहयोग प्रदान करें।

आपका मात्र ५१०० रुपये वार्षिक का सहयोग न्यास के कार्य को अद्वितीय गति प्रदान कर सकता है।

हमारे अत्यन्त आत्मीय बन्धुजन!

इस अपील को मेरी व्यक्तिगत अपील कहिए अथवा न्यास की अपील समझिए। यह आप तक पहुँचे और आपकी आत्मीयता हमें प्राप्त हो, इसी नाते हम प्रथम बार अर्थ सहयोग का निवेदन कर रहे हैं।

आपको यह जानकारी होगी ही कि नवीन, आकर्षक प्रकल्पों का निर्माण कर न्यास सहस्रों लोगों तक वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्वों को अग्रप्रसारित कर रहा है। सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर द्वारा आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा में वेद, वेद के प्रादुर्भाव, भारतीय ऋषियों के योगदान, योगिराज श्री कृष्ण और भगवान राम के पावन जीवन–चरित्र, मेवाड़ की माटी के गौरव महाराणा प्रताप, आर्यसमाज के रत्नों, भारत को स्वतन्त्रता दिलाने वाले क्रान्तिकारियों, सत्यार्थ प्रकाश चित्रावली एवं महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के माध्यम से व संस्कार वीथिका के माध्यम से मानव निर्माण की पूरी योजना आगन्तुकों के सामने रखी जा रही है। इस क्रम में मानों महर्षिवर की संस्कार विधि मूर्तरूप में चित्रित हो गयी है।

वहीं उच्चतम गुणवत्ता के 3D थियेटर का निर्माण कर महापुरुषों के जीवन–चरित्र का दिग्दर्शन भी कराया जा रहा है। यहाँ यह अंकित करना आवश्यक है कि मुक्त हस्त से दिए हुए उदार अर्थ के सहयोग से भव्य संस्कार वीथिका परिसर व थियेटर का निर्माण माननीय सुरेश चन्द्र जी आर्य; अहमदाबाद और माननीय दीनदयाल जी गुप्त; कोलकाता के पवित्र सहयोग से हो पाया है एवं संस्कारों का निर्माण आर्यजनों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित धन से हुआ है। परन्तु इनको गति देने के लिए, वर्ष में सारे प्रकल्प 365 दिन गतिशील रहें, इसके लिए आवश्यक है कि कुछ लोग आगे आएँ और प्रतिवर्ष अपना योगदान दें, इसीलिए आपसे यह निवेदन कर रहा हूँ। **मैं व्यक्तिगत रुप से अनुगृहीत होऊँगा अगर आप मात्र 5100 सौ रुपये प्रतिवर्ष देने का संकल्प लेंगे।** न्यास का एकाउन्ट नम्बर भी नीचे अंकित है। न्यास को प्रदत्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

हमें आशा ही नहीं विश्वास है कि आप हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर 5100 रुपये वार्षिक का यह अर्थ सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। **निश्चित मानिये आपके सहयोग से जो ऊर्जा और गति हमें मिलेगी वह लाखों लोगों तक वैदिक संस्कृति के उदात्त मूल्यों को सम्प्रेषित करने में मील का पत्थर साबित होगी।**

निवेदक– अशोक आर्य, अध्यक्ष–न्यास

चैक श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, मेन ब्रांच, दिल्ली गेट, उदयपुर बैंक एकाउन्ट का विवरण : AC. No. : 310102010041518, IFSC CODE- UBIN 0531014, MICR CODE- 313026001 में जमा करा कृपया सूचित करें।

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की अपूरणीय क्षति

नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र में आने वाले पर्यटकों को वैदिक संस्कृति से अत्यन्त आकर्षक और प्रभावशाली अंदाज में परिचित कराने वाले (गाईड) पथ प्रदर्शक श्री शम्भू लाल जी का ७ अक्टूबर २०२३ को अनायास निधन हो गया। उनके जाने से केन्द्र की

गतिविधियों को अपूणरणीय क्षति हुई है। उन जैसे मधुर स्वभाव के व्यक्तित्व और महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्य को उद्घाटित करने में जिस प्रतिभा, जिस जिजीविषा और दृढ़ निश्चय का प्रस्फुटन उनके द्वारा होता था वैसा संभवतः किसी अन्य में नहीं मिलेगा। लगभग तीन–चार माह पूर्व अपने गाँव में श्री शम्भू लाल दो सीढ़ियों से गिर पड़े थे, सर में चोट आई थी। जब उनको अस्पताल में भर्ती कराया था तो चिकित्सकों को कोई आशा नहीं थी, परन्तु जुझारू योद्धा शम्भूलाल उन परिस्थितियों से निकले और शीघ्रता से स्वास्थ्य लाभ करने लगे हम सबको आशा थी अब वे अतिशीघ्र अपना कार्य कर सकेंगे।

परन्तु विधाता को कुछ और ही मंजूर था। ७ अक्तूबर को प्रातः वे परिजनों को विलखता छोड़ अपनी आगामी यात्रा पर प्रस्थान कर गए।

प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें और शोक संतप्त परिवार को इस मार्मिक दुःख को सहने की शक्ति भी प्रदान करें।

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के सभी न्यासी और कर्मचारी श्री शम्भू लाल के प्रति श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं।

– भँवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री–न्यास

आत्म निवेदन

क्या सनातन मच्छर या एड्स है?

सनातन का अर्थ क्या है? जो सदा से है और सदा रहेगा, वही सनातन कहला सकता है, प्रथम तो हम यह समझ लें। अर्थात् हमें यह समझना चाहिए। जो सत्य है, शाश्वत है और हर काल में सत्य है (ऐसा नहीं कि एक समय सत्य है और बाद में भूल का ज्ञान होने पर उसमें सुधार की आवश्यकता अनुभव हो, ऐसा सत्य शाश्वत नहीं है) जो अजर है, जो सबके लिए कल्याणकारी है, किसी भी प्राणी के लिए अहितकर नहीं है, वह सनातन है। सनातन की कसौटी क्या है? विश्वभर के मानव ही नहीं प्राणीमात्र के हित की भावना सनातन में आवश्यक रूप से गुम्फित होनी चाहिए। मानवता के उदात्त गुण उसके आवश्यक तत्व हैं। उसके अनुसरण के परिणामस्वरूप एक ऐसी जीवन शैली प्रकटीभूट हो जिससे संसार में सामंजस्य, सौमनस्य, सहभागिता और परस्पर एक दूसरे की उन्नति के भाव प्रस्फुटित हों। किसी के भी प्रति विद्वेष और हिंसा के भावों का सनातन में कोई स्थान नहीं हो सकता। ऐसा सार्वभौमिक, सार्वकालिक, अभ्युदय और निःश्रेयस के पथ पर अग्रसित करने वाला मार्ग सनातन है। जिसे निश्चित रूप से धर्म के नाम से अभिहित किया जा सकता है अर्थात् यही सनातन धर्म है।

सनातन में ऐसी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती जिसका विरोध सम्भव भी हो। एक उदाहरण-

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतम ब्रूयादेष धर्मः सनातनः॥ - मनु. ४/१३८

क्या विश्व का कोई मानव इसका विरोध करेगा? या कर सकेगा? अतएव यही सनातन है। यही उपदेश ईश्वर द्वारा किया गया। और इसीलिए प्रायः आप लोगों ने सुना होगा कि वैदिक धर्म ही सत्य सनातन है, यह उद्घोषित किया जाता है। वैदिक धर्म को सनातन क्यों कहा गया? क्योंकि वेदाधारित इस धर्म में उपरोक्त सभी तत्व विद्यमान हैं। शास्त्रों में कहा है-

पितृदेवमनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम्।
अशक्यं चाप्रमेयं च वेदशास्त्रमिति स्थितिः। - मनु १२/९४

अर्थात् मनुष्यों, पितरों और देवों सभी के पथ प्रदर्शन हेतु सनातन चक्षु वेद हैं, अर्थात् मानवता के सत्य स्वरूप

का दिग्दर्शन, उसके स्वरूप का ज्ञान वेद के द्वारा होता है। तो दूसरे शब्दों में अगर हम यह कहें कि वेद के द्वारा मानव के लिए करणीय और अकरणीय जो कुछ भी बताया गया है वही सनातन है इसलिए वैदिक धर्म सनातन है। वेद के निर्देश अपरिवर्तनीय हैं सबके लिए कल्याणकारी हैं, यह मानव की प्रथम पीढ़ी को प्रभु द्वारा दिया गया ज्ञान है इसलिए सनातन है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

सनातन के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द ने लिखा है- 'देखो! जो परमेश्वर की प्रकाशित वेदोक्त बात है वही सनातन और उसके विरुद्ध वह सनातन कभी नहीं हो सकती ऐसा ही सब लोगों को मानना चाहिए...।'

आज की बात करें तो हिन्दू धर्म को वैदिक धर्म का नया नाम मान लिया गया है, जो कि अत्यन्त प्रचलित होकर सर्वमान्य जैसी स्थिति में आ गया है, और हिन्दुओं में वेद को अपौरुषेय और परम प्रमाण माना जाता है, यही कारण है कि हिन्दू धर्म को भी सनातन कहा जाता है। {यद्यपि महर्षि दयानन्द इसे नामभ्रष्ट होना मानते हैं} इसके समर्थन में प्रबल तर्क यह है कि हिन्दू धर्म की सभी शाखा प्रशाखा वेद को परम प्रमाण और अपौरुषेय मानती हैं। (वे वेद के निर्देशों को सही सही समझ कर उसके अनुसार न चलकर उससे उलट भी चलतीं हैं, यह पृथक् बात है)। सभी हिन्दू धर्माचार्यों की बात करें तो भी यही स्थिति है कि सभी वेद को परम प्रमाण मानते हैं। विभिन्न कालों में भी वेद को प्रमाण माना जाता रहा है, इसमें सन्देह नहीं।

जैसा हमने पूर्व में कहा- यह बात अलग है कि वैदिक निर्वचनों को उन्होंने भिन्न-भिन्न प्रकार से लिया है अतः व्यवहार में भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। आवश्यक यह तो है कि वेद के सत्य पथ को पुनः अपना लेने का प्रयास सभी को करना चाहिए। 'निराकार एकेश्वर' सनातन का मूलभूत सिद्धान्त है जो वेदों में निरूपित है, वह स्वीकार्य होना चाहिए। परन्तु जब विद्या का अत्यधिक लोप हुआ तब अज्ञानवश अथवा निहित स्वार्थ के कारण वेदों के नाम पर ही भिन्न मत सृजित कर लिए गए। (यह अत्यन्त लम्बा विषय है। अतः यहाँ विश्लेषण सम्भव नहीं है)। भारत भूमि में जन्मे प्रायः सभी मत (जैन, बौद्ध और चार्वाक को छोड़कर) वेद का ही प्रमाण प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं। केवल एक उदाहरण दे रहे हैं। जिससे पाठक समझ सकेंगे कि वेद के सर्वथा विरुद्ध आचरण वाले भी अपनी बात को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए वेद का ही सहारा लेते हैं।

तथाकथित सन्त नामी धूर्त रामपाल भी वेद का सहारा लेने में संकोच नहीं करता क्योंकि उसे भी ज्ञात है कि इस धरा पर अपने मत को प्रमाणित करने के लिए उसे सनातन वेद की शरण में जाना ही पड़ेगा। वह लिखता है-

'वेदों में प्रमाण के अनुसार पूर्ण परमात्मा कबीर है। परमेश्वर सशरीर है। सबके पालन के लिए परमात्मा का शरीर है। स्पष्ट उल्लेख है पूर्ण शान्तिदायक, पापों को हरण करने वाला, बन्धनों का नाश करने वाला परमेश्वर कबीर देव स्वयं प्रकाशित सतलोक में रहता है।' यह सम्पूर्ण अवधारणा वेद विरुद्ध है न ही कबीर दास का वेद में कहीं उल्लेख है, परन्तु इसे भी वैदिक मत कहने का प्रयास किया जा रहा है।

तो यह विषय सर्वथा भिन्न परन्तु महत्वपूर्ण है कि वैदिक (हिन्दू) जीवन पद्धति में भिन्न-भिन्न प्रकार की मान्यताएँ स्थापित हो गयीं हैं। परन्तु फिर भी वेद का प्रामाण्य, ईश्वर की सर्वोच्चता, सृष्टि की उत्पत्ति, धारण और प्रलयकर्त्ता के साथ उसे जीवों के कर्मों का फल प्रदाता मानना, पुनर्जन्म आदि मान्यताएँ सनातन धर्म में हैं। वेद वर्णित ईश्वर के स्वरूप को महर्षि दयानन्द ने इस प्रकार वर्णित किया है- 'ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है।' इससे हिन्दू मत भी भटक गया है।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि 'सनातन ईश्वर प्रदत्त ज्ञान अथवा जीवन शैली ही हो सकती है। आदिम ज्ञान और आदिम भाषा अपौरुषेय अर्थात् ईश्वर प्रदत्त ही हो सकती है। क्योंकि सृष्टि की प्रथम मानव पीढ़ी को ज्ञान

देने वाला परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त और कोई नहीं था। इसी से यह वेद ज्ञान भी प्राणी मात्र के लिए उनका कल्याण करने वाला ही होना चाहिए, जिस प्रकार कि माता-पिता का उपदेश कभी भी अपने बच्चों के लिए अहितकारी नहीं होता।

इसीलिए सनातन धर्म मनुष्य, पशु-पक्षी, पल्लव, कीट-पतंग सभी को सुरक्षित और सुखी देखना चाहता है।

ऐसा कोई भी कार्य जो किसी के लिए भी अहितकारी हो सकता है ऐसी उस इच्छा को सनातनी बलपूर्वक दबा देता है क्योंकि वह इन्द्रियजयी होता है अर्थात् इन्द्रियों का स्वामी होते हुए अपनी इच्छा के अनुसार विषयों में इन्द्रियों को प्रविष्ट कराता है ना की विषयों के आकर्षण में बद्ध इन्द्रियों के पीछे-पीछे भागता है।

क्योंकि विषयों के अति सेवन का वेद में निषेध किया है।

जन्तोर्मा शिश्नदेवा अपि गुर्ऋतं नः। - ऋग्वेद ७/२१/५

अर्थात् मनुष्य लोग कामवासना में निरन्तर रत रहने वाले मुझे अर्थात् ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकते। अतः सभी इन्द्रियों का मर्यादापूर्वक प्रयोग सनातन की विशेषता है। आध्यात्मिकता इसका केन्द्र बिन्दु है, त्यागवाद इसका आदर्श है। हम उपभोग तो करें परन्तु त्यागपूर्वक करें अर्थात् अन्यों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए उसकी यथासम्भव पूर्ति करने का प्रयास करें।

तेन त्यक्तेन भुन्जीथा। - यजु.४०/१

वेद निर्देशित सनातन जीवन पद्धति कैसी हो, देखिये-

य आध्राय चकमानाय पित्वोऽन्नवान्त्सन्नफितायोपजग्मुषे।
स्थिरं मनः कृणुते सेवते पुरोतो चित्स मर्डितारं न विन्दते।। - ऋग्वेद १०/११७/२

अर्थात् अन्नवाला होकर के मनुष्य दरिद्र के लिये, भूखे के लिये, पीड़ित के लिये, शरणागत के लिये अवश्य भोजन दे। जो इनको न देकर स्वयं खाता है, वह पापी है, वह सुख देनेवाले परमात्मा को प्राप्त नहीं करता है।

आगे के मन्त्र को भी देखें-

स इद्भोजो यो गृहवे ददात्यन्नकामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम्।। - ऋग्वेद १०/११७/३

अर्थात् भोजन खानेवाला, खिलानेवाला या पालक वह ही है, उसे ही कहना चाहिये, जो अन्न के ग्राहक, अन्न के चाहनेवाले-विचरण करते हुए आगन्तुक और कृश शरीर के लिये देता है, इस ऐसे दाता के लिये समय की पुकार पर पर्याप्त हो जाता है, मिल जाता है, उसके पास कमी नहीं रहती, दूसरे विरोधी जनों का भी वह मित्र बन जाता है, सब उसकी प्रशंसा करते हैं। अर्थात् सत्य सनातन वैदिक धर्म की शिक्षा है कि जो कुछ आपके पास है उसे दूसरे को देने को तत्पर रहें। निश्चिन्त रहें, आपके पास कोई कमी नहीं रहेगी।

इस मंत्र में एक प्रकार से सनातनधर्मी के चरित्र की व्याख्या कर दी है और उसका सुखद परिणाम भी बता दिया है, श्रेष्ठ कार्य का श्रेष्ठ फल।

सत्य सनातन वैदिक धर्म में जिन पंच महायज्ञों को प्रतिदिन करने का विधान किया है उनके माध्यम से स्वयं का कल्याण, माता-पिता आचार्य आदि का सम्मान, अतिथियों से विद्यापान, और मानवेतर प्राणियों को भोजन दान के साथ-साथ पर्यावरण की सुरक्षा का दृढ़ निश्चय सुनिश्चित किया जाता है।

सत्य सनातन वैदिक धर्म का आदर्श देखिए यजुर्वेद में कहा है-

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳराजसु नस्कृधि।

रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्॥ - यजु. १८/४८

हे जगदीश्वर वा विद्वान्! आप (नः) हम लोगों के (ब्राह्मणेषु) ब्रह्मवेत्ता विद्वानों में (रुचा) प्रीति से (रुचम्) प्रीति को (धेहि) धरो, स्थापन करो (नः) हम लोगों के (राजसु) राजपूत क्षत्रियों में प्रीति से (रुचम्) प्रीति को (कृधि) करो (विश्येषु) प्रजाजनों में हुए वैश्यों में तथा (शूद्रेषु) शूद्रों में प्रीति से (रुचम्) प्रीति को और (मयि) मुझ में भी प्रीति से (रुचम्) प्रीति को (धेहि) स्थापन करो।

हम सर्वप्रिय हो जायें यह वैदिक सनातन जीवन पद्धति है। आदर्श यह है कि मनुष्य और मनुष्य के बीच में

स्नेह, आत्मीयता, करुणा इन सब का ही संचार होना चाहिए। मानवों के समस्त वर्णों के मध्य तो प्रीति हो ही हम अन्य जातियों एवं पर्यावरण से भी प्यार करें।

क्या विषमता का मामूली चिह्न भी यहाँ दिखायी देता है? जी नहीं। उक्त मन्त्र में चार वर्णों की बात कही गयी है। यह योग्यता, रुचि और स्वभाव के आधार पर वर्गीकरण मात्र है। इनमें कोई छोटा-बड़ा नहीं है। चारों वर्णों में कोई ऊँचा नीचा नहीं है। योग्यता के आधार पर इनके पृथक्-पृथक् कार्य हैं, और यह भी कि वर्ग विशेष के लिए उपयुक्त योग्यता अर्जित करने पर वर्ण परिवर्तन सम्भव है। केवल इतना है, परन्तु किसी समय में वर्ण को जाति मानकर ऊँच-नीच ही नहीं परस्पर चौड़ी खाई बनाकर अमानवीय व्यवहार का आरम्भ देश का दुर्भाग्य रहा इसमें सन्देह नहीं, परन्तु यह कुरीति सनातन नहीं। यह मिलावट बहुत पुरानी नहीं।

महर्षि दयानन्द स्पष्ट लिखते हैं- 'जो तुम पाँच सात पीढ़ियों के वर्तमान को सनातन व्यवहार मानते हो और हम वेद तथा सृष्टि के आरम्भ से आज पर्यन्त की परम्परा मानते हैं।' स्पष्ट हुआ कि जो प्रारम्भ से वेदोक्त व्यवस्था है वही सनातन है। ये कुरीतियाँ सनातन का अंग नहीं, मिलावट हैं जिन्हें शीघ्र से शीघ्र विनष्ट कर देना चाहिए।

अनेक महापुरुषों ने इस या ऐसी ही अन्य कुरीतियों को समाज से मिटाने के अथक प्रयास किये। स्वामी दयानन्द और आर्य समाज इनमें सर्वोपरि हैं क्योंकि जब सारे नेता तब से अब तक इस समस्या का राजीनीतिक लाभ उठाने में लगे रहे तब स्वामी दयानन्द ने इस समस्या का मूल कारण और उसका सही निदान प्रस्तुत किया।

इस आलेख के मुख्य बिन्दु की ओर आने से पूर्व पुनः सनातन वैदिक संस्कृति के उपासक की चरित्रगत विशेषता उद्धृत कर दें ताकि पाठक निर्णय कर सकें कि ऐसी जीवन शैली वरणीय है अथवा उपेक्षणीय?

वेद कहता है कि इन चारों वर्णों के स्त्री-पुरुषों को कैसा होना चाहिए? उनकी जीभ के अग्रभाग में मधुरता हो और जीभ के मूल में मधुरता हो, मनुष्य के प्रत्येक कर्म में मधुरता का वास हो। वह प्रार्थना करता है कि हे प्रभु! मेरा आना-जाना मधुर हो मैं जो भाषा बोलूँ वह मधुर हो और मैं स्वयं मधुरता की मूर्ति बन जाऊँ।

अत्यन्त संक्षेप में सत्य सनातन वैदिक धर्म के कुछ आवश्यक तत्व हमने यहाँ निवेदित किए जिससे स्पष्ट होता है कि स्वयं की उन्नति करने का, धन-धान्य और भोग्य सामग्री एकत्रित करने का यहाँ कोई निषेध नहीं है परन्तु यह सब एकत्रीकरण धर्मपूर्वक होना चाहिए यह आवश्यक है अर्थात् ऐसा सब करने में किसी को कोई पीड़ा दुख का लेश मात्र भी नहीं हो इस बात का ध्यान रखना चाहिए। कवि ने ठीक ही कहा है-

धन माल बटोर चाहे जितना, पर इतना ध्यान अवश्य रहे।
अपना घर बार बनाने को औरों का घर बर्बाद न कर।। यह भावना ही सनातन है।

दूसरी बात यज्ञीय भावना को अपने जीवन में स्थान देना चाहिए अर्थात् जो कुछ हमने अर्जित किया है उसमें से परोपकार के लिए भी हमने वितरित करना है यह हमारा आवश्यक कर्तव्य है। यज्ञीय जीवन वैदिक धर्म की केन्द्रीय धुरी है जिसके अवलम्बन से ही व्यक्ति स्वर्ग को प्राप्त कर सकता है। **स्वर्ग कामो यजेत्**- यहाँ स्वर्ग का तात्पर्य किसी स्थान विशेष से नहीं है बल्कि सुख विशेष से है।

कितना भी लिखें सत्य सनातन वैदिक धर्म की विशेषताओं के बारे में, वह कम ही पड़ेगा अतः उपरोक्त अत्यन्त थोड़ा सा निवेदन करने के पश्चात् हम यह प्रश्न करना अवश्य चाहेंगे कि इसमें ऐसा कौन सा बिन्दु है जिससे किसी भी मानव को या प्राणी को कष्ट हो सकता है? अतः ऐसे सनातन को विनष्ट करने की इच्छा रखने वाले या तो सनातन के स्वरूप को जो कि उसका मूल स्वरूप है उसे जानते नहीं और विकृति से युक्त स्वरूप को ही सनातन मानकर उसका विरोध करते हैं अन्यथा उनका उद्देश्य समस्त मानव समाज को नष्टभ्रष्ट कर देना ही समझा जाएगा। विरोध सनातन का नहीं उसमें घुस गयीं कुरीतियों का होना चाहिए। एक बात और ध्यान रखें कि अनेक समाज सुधार आन्दोलनों के फलस्वरूप और कानूनों के निर्माण के द्वारा ये कुरीतियाँ यद्यपि समूल नष्ट तो नहीं हुयीं हैं परन्तु प्रभावी रूप से कम हो गयीं हैं, वर्त्तमान में यह भी ध्यान में रखना चाहिए।

अब हम उस मुद्दे की ओर आते हैं जिसके कारण यह लेख लिख रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व आन्ध्र प्रदेश में मुख्यमंत्री के सुपुत्र और स्वयं केबिनेट मंत्री श्री अन्ना दुरई स्टालिन ने सनातन उन्मूलन सम्मेलन में सहभागिता करते हुए सनातन धर्म की तुलना मच्छर डेंगू मलेरिया इत्यादि से की और जैसे कि स्वस्थ शरीर के लिए इन सब का विनाश आवश्यक है उसी प्रकार से एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए सनातन का उन्मूलन अत्यावश्यक है ऐसा उनके कथन से निष्कर्ष निकलता है। इसके बाद तो अन्य बहुत सारे नेताओं के बयान आ गए जिसमें सनातन को एड्स और कुष्ट जैसी बीमारियों के समक्ष बताया। आज के समय में यह सब अभूतपूर्व है। यह सब राजनैतिक दृष्टि से हो रहा है। यद्यपि यह सारा कुछ नया नहीं है, दक्षिण की राजनीति में घुल मिल गया है।

निःसन्देह वैदिक वर्ण व्यवस्था के स्वर्णिम स्वरूप को जब जन्मगत जाति व्यवस्था के रूप में बदलकर कुछ लोगों द्वारा अन्यों पर भगवान का आदेश बताकर अमानवीय व्यवहार किया जावेगा तो प्रतिरोध स्वाभाविक ही नहीं आवश्यक है, पर जब यह प्रतिरोध राजनीतिक लाभ के लिए समूची व्यवस्था को ही नष्ट करने का आह्वान करे तो घातक हो जाता है। यह जो आज उदयनिधि द्वारा कहा जा रहा है पेरियार का अनुसरण ही है। पेरियार इस आलेख के विषय नहीं हैं परन्तु दक्षिण की मनःस्थिति समझाने हेतु थोड़ा सा वर्णन आवश्यक है।

पेरियार के नाम से विख्यात, ई. वी. रामास्वामी का तमिलनाडु के सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्यों पर असर अत्यन्त गहरा है, उनका सम्पूर्ण क्रियाकलाप हिन्दू धर्म की कुरीतियों और जन्मगत जाति व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मणों के कसे शिकंजे के विरोध में है।

उन्होंने आत्म-सम्मान आन्दोलन शुरू किया जिसका लक्ष्य गैर-ब्राह्मणों (जिन्हें वो द्रविड़ कहते थे) में आत्म-सम्मान पैदा करना था, बाद में वो १९१६ में शुरू हुई एक गैर-ब्राह्मण संगठन दक्षिण भारतीय लिबरल फेडरेशन (जस्टिस पार्टी के रूप में विख्यात) के अध्यक्ष बने।

पेरियार का मानना था कि समाज में निहित अंधविश्वास और भेदभाव की वैदिक हिन्दू धर्म में अपनी जड़ें हैं, जो समाज को जाति के आधार पर विभिन्न वर्गों में बाँटता है जिसमें ब्राह्मणों का स्थान सबसे ऊपर है। इसलिए, वो वैदिक धर्म के आदेश और ब्राह्मण वर्चस्व को तोड़ना चाहते थे। एक कट्टर नास्तिक के रूप में उन्होंने भगवान के अस्तित्व की धारणा के विरोध में प्रचार किया। उन्होंने न केवल ब्राह्मण ग्रन्थों की होली जलाई बल्कि रावण को अपना नायक भी माना। स्पष्ट है कि पेरियार ने वैदिक धर्म की वास्तविकता का ज्ञान प्राप्त करने की बजाय केवल उसका विरोध करने तक अपने को सीमित रखा। हिन्दू धर्म की कुरीतियों पर प्रचण्ड प्रहार तो दयानन्द ने भी किया था परन्तु उन्होंने घृणा के बीज को पनपने नहीं दिया। उनका उद्देश्य हिन्दू धर्म में आयीं बीमारी को ठीक करना था अतएव वे कड़वी दवा दे रहे थे, जबकि पेरियार और उनके शिष्य शरीर को ही विनष्ट करने के पक्षधर प्रतीत होते हैं, जो उदयनिधि के उक्त बयान के आधार हैं।

यह सारा मसला राजनीतिक है यह स्पष्ट उस बयान से हो गया जिसमें कहा गया कि I.N.D.I.A गठबन्धन के सभी घटकों में अन्य किसी विषय पर भले ही मतभेद हो परन्तु सनातन विरोध में सब एक मत हैं।

बाद में कुछ इस तरह के स्पष्टीकरण भी आए कि उनका आशय सनातन धर्म में व्याप्त कुरीतियों से था, तो हमारा निवेदन है कि किसी भी धर्म में या मत में कुरीतियाँ उसके स्वरूप का, शुद्ध स्वरूप का दिग्दर्शन नहीं कर सकतीं। न ही ये कुरीतियाँ उस धर्म का प्रतिबिम्ब कहीं जा सकतीं। वैदिक धर्म की पावन निर्मल धारा में समय के अन्तराल में अनेक प्रकार के नालों के गन्दे पानी का सम्मिश्रण हुआ है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता परन्तु आवश्यकता केवल इतनी है इस गंदे पानी को स्वच्छ कर अथवा गंदलेपन को नष्ट करके पावन निर्मल धारा के पवित्र स्वरूप को बनाए रखें न कि समूची गंगा को ही समाप्त कर दें।

स्पष्ट जान लें कि रूढ़ जातिप्रथा और अस्पृश्यता का लेश भी सनातन वैदिक धर्म में नहीं है। वैदिक वर्ण व्यवस्था को जन्मगत जातिप्रथा समझ लेना मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं है। ब्राह्मण शब्द विद्वानों और बुद्धिजीवियों के लिए प्रयुक्त है ना कि किसी जाति विशेष के लिए। परन्तु ब्राह्मणों को जातिगत रूप में एक समूह मानते हुए इन सभी को सनातन का पर्याय मानकर विनाश करने की बात कह देना केवल सामाजिक विद्वेष उत्पन्न करने का कारक बन सकता है। इससे किसी का कोई भला नहीं हो सकता।

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती के अवसर पर अहमदाबाद में रिवर फ्रन्ट पर ज्ञान ज्योति पर्व अत्यन्त उत्साह और उल्लास पूर्वक मनाया गया।

गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अहमदाबाद में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती के अवसर पर गत दिनांक ८ अक्टूबर २०२३ को अहमदाबाद के रिवर फ्रन्ट पर 'ज्ञान ज्योति पर्व' अत्यन्त उत्साह और उल्लास के साथ मनाया गया। इस भव्य कार्यक्रम में गुजरात राज्य के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी और गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्रभाई पटेल विशेष रूप से उपस्थित रहे। माननीय राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री के आगमन पर उनका स्वागत करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशजी आर्य तथा गुजरात प्रान्तीय सभा के महामंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर ने उन्हें २०० कुण्डीय यज्ञ की पूर्णाहुति करने के लिये आमंत्रित किया। यज्ञ की पूर्णाहुति में गुजरात सरकार के राज्य मंत्री श्री जगदीशभाई विश्वकर्मा ने भी भाग लिया।

गुजरात प्रान्तीय सभा के प्रधान श्री सुरेशजी आर्य ने अपने स्वागत भाषण में मंचस्थ सभी महानुभावों का, सभी विशिष्ट अतिथियों का तथा सभी आर्यजनों का, आर्यजनों की करतल ध्वनि के बीच स्वागत और अभिनन्दन किया। उसके बाद कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे माननीय राज्यपाल महोदय तथा मुख्य अतिथि के रूप में पधारे माननीय मुख्यमंत्री जी का प्रान्तीय सभा के प्रधान, महामंत्री तथा वरिष्ठ उपप्रधान द्वारा पगड़ी और पीतवस्त्र पहिनाकर एवं स्मृति-चिह्न देकर हार्दिक स्वागत किया गया। ज्ञान ज्योति पर्व के इस शुभ अवसर पर मुख्यमंत्री भूपेन्द्र भाई पटेल ने कहा कि जब पूरे देश में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जयन्ती मनाई जा रही है तो मुझे भी इसमें शामिल होने का अवसर [illegible] दयानन्द जैसी विभूति ने यहाँ जन्म लिया।

जनकल्याण को लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्यों की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री भूपेन्द्रभाई पटेल ने कहा कि दयानन्द सरस्वती ने समाज की बुराइयों को दूर करके लोगों को सही रास्ता दिखाकर जनकल्याण का अमृत पिलाया। उन्होंने कहा कि आज श्री नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में जनकल्याण का वही अमृत विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से जन-जन तक पहुँच रहा है। आज देश स्वामी दयानन्द जी के सपनों को साकार होते देख रहा है। गरीबों, वंचितों की सेवा, अन्त्योदय का यज्ञ पूरे देश में चल रहा है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देश में संप्रभुता लाने के साथ-साथ अपनी परम्पराओं को समृद्ध करने का आत्मविश्वास जागा है। श्री नरेन्द्र भाई द्वारा दिये हुए 'विरासत भी और विकास भी', इस नारे पर चलते हुए हमें मिलकर देश के इस अमृतकाल को अपनी संस्कृति का स्वर्णकाल बनाने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए।

इस कार्यक्रम में भारी संख्या में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रतजी ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को पूरे देश में स्थापित करने के उद्देश्य से उनकी २००वीं जयन्ती पर पूरे देश में होने वाले अनेक कार्यक्रमों का शुभारम्भ १२ फरवरी २०२३ को नई दिल्ली में 'ज्ञान ज्योति पर्व' के रूप में किया था। उन्होंने कहा कि ऋषि दयानन्द जी ने अपनी वैचारिक क्रान्ति द्वारा समाज में व्याप्त अंधविश्वास, पाखण्ड, छूआछूत जैसी अनेक कुरीतियों को दूर करने हेतु एक अद्भुत जागृति पैदा की। उन्होंने वेदों के ज्ञान से दुनिया को परिचित कराया। देश की प्राचीन वैदिक संस्कृति की रक्षा एवं संवर्धन हेतु उन्होंने गुरुकुलों की स्थापना की। स्त्री-शिक्षा को अनिवार्य बतलाकर उन्होंने भारतीय नारी को प्रतिष्ठा व सम्मान का दर्जा दिलवाया।

इस अवसर पर राज्य मंत्री श्री जगदीश विश्वकर्मा, अहमदाबाद की मेयर श्रीमती प्रतिभा जैन, विधायक श्री जीतूभाई पटेल, श्री हर्षदभाई पटेल, गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, मंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर, वरिष्ठ उपप्रधान श्री वाचोनिधि जी आर्य, वैदिक प्रवक्ता आचार्य वागीश जी, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री प्रकाशजी आर्य, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जनसिंह जी कोठारी, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक जी आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशनलाल जी गहलोत, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी आर्य सहित अन्य गणमान्य लोग बड़ी संख्या में उपस्थित थे। गुजरात के गाँधीधाम, जामनगर, ध्रांगध्रा, अहमदाबाद, भावनगर, राजकोट, बडोदरा, सूरत, पोरबंदर, रोजड़, टंकारा, नडियाद, जूनागढ़, वढ़वान, सुरेन्द्रनगर, भरूच, नेत्रंग, गोंडल सहित व गुजरात के बाहर से ४००० से भी अधिक आर्यजन कार्यक्रम में उपस्थित रहे थे। इस अवसर पर २०० कुण्डीय हवन का आयोजन भी हुआ।

इस समारोह में मुख्य वैदिक प्रवक्ता आचार्य वागीशजी शर्मा ने अपने व्याख्यान में कहा कि १९वीं शताब्दी में जब भारत में अज्ञानता, अंधविश्वास और सामाजिक कुरीतियाँ व्याप्त थीं, तब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक पथप्रदर्शक के रूप में कार्य करके चारों ओर प्रकाश फैलाया।

इस अवसर पर जामनगर के आर्य कन्या विद्यालय की कन्याओं द्वारा चार प्रमुख सामाजिक समस्याओं पर आधारित एक भव्य नाटिका प्रस्तुत की गई। दिल्ली से पधारे भजनोपदेशक श्री कंचनकुमार जी की भजन मण्डली द्वारा भी बहुत ही रोमांचक भजन प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का सफल संचालन आचार्य वाचोनिधि जी द्वारा किया गया। 'ज्ञान ज्योति पर्व' का यह अति भव्य एवं अनुशासित कार्यक्रम प्रान्तीय सभा के महामंत्री श्री दीपकभाई ठक्कर के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात् राष्ट्रीय गान के साथ सम्पन्न हुआ।

- भवानीदास आर्य; मंत्री-न्यास

इसी प्रकार उदगीर में शिवरात्रि पर तथा लातूर में होली पर आयोजित सामूहिक प्रीतिभोज के कार्यक्रमों में कई निकट सम्बन्धियों का शुरू में विरोध रहा, पर बंसी-श्याम के अपने सिद्धान्तों पर अड़िग रहने, स्वार्थ से ज्यादा समाज के हित की परवाह करने के कारण उन्हें अपनी कट्टरता छोड़नी पड़ी। अनेक तथाकथित हरिजनों को पुरोहित बनाकर छोड़ा। बहुत सारे हिन्दू मांसाहार, नशीले पदार्थों का सेवन छोड़कर पक्के आर्यसमाजी बन गए।

लेकिन यह सब मुसलमान कट्टरपन्थियों को नागवार गुजरने लगा। वे तो हिन्दुओं को उनके धर्म की कमियाँ बता कर उनका धर्म परिवर्तन कर मुसलमानों की संख्या बढ़ाने में लगे हुए थे। कहीं बहला-फुसला कर तो कहीं दहशत फैला कर इस काम को अंजाम देने में लगे हुए थे। रजाकार और रोहिले हिन्दू जनता पर अत्याचार करने में सबसे आगे थे, उन्हें शासन का कभी खुला कभी छिपा समर्थन प्राप्त था।

महिलाओं पर अत्याचार करने से भी वे बाज नहीं आते थे। उदगीर के तहसीलदार जान मोहम्मद द्वारा सीधे-सीधे गुण्डों की तरफदारी कर जनता पर अत्याचार करने में उनकी मदद करने पर श्यामलाल जी ने उनके खिलाफ आवाज उठाई। चिढ़कर जान मोहम्मद ने शासन में उनकी झूठी शिकायतें भेजनी शुरु कर दीं। अमन शान्ति को उनसे खतरा बता कर घर के आगे सशस्त्र पहरा बिठा दिया। धार्मिक जुलूस पर आक्रमण कर श्यामलाल जी को बचाव में हवाई फायर करने पर मजबूर किया और गुण्डों के हताहत होने की अफवाह फैला कर उनके घर पर हमला कर दिया। जब इस तरह की वारदातें बढ़ने लगीं तो कोर्ट की पनाह लेकर गरीबों के मुकदमे दोनों भाई मुफ्त में लड़ने लगे। शासन की ओर से भी अनेक झूठे मुकदमे दोनों पर व अन्य निरपराधों पर दाखिल कर उन्हें तंग किया जाता था। अनेक बार जुलूसों पर रजाकारों के हमलों का प्रतिकार कर हिन्दुओं का आत्मविश्वास बढ़ाते रहे।

परन्तु दोनों भाइयों के मन में किसी के प्रति द्वेष न था। आयुर्वेद का अच्छा ज्ञान होने से सभी का मुफ्त में इलाज कर और दवाइयाँ भी देते थे। एक पुलिस के सिपाही ने श्यामलाल जी को मारने की सुपारी ली थी। उसे प्लेग होकर मरणासन्न अवस्था में घरवालों ने भी छोड़ने पर अपनी जान की परवाह न कर उसका सफल इलाज कर उसे चंगा कर डाला।

दीनदार सिद्दीकी नामक स्वघोषित बसवेश्वर के अवतार की पोल इन्होंने खोली। पठानों के जाल में

अटके अनेकों परिवारों को मुक्त करवाया। ढोंगी पीर औलियाओं से समाज को बचाने बौद्धिक मोर्चा खोला। उत्तर भारत से अच्छे वक्ताओं को आमंत्रित किया, जैसे पं. मंगलदेव शास्त्री, पं. रामचंद्र देहलवी, आदि। देहलवी जी संस्कृत के साथ साथ उर्दू, अरबी, फारसी के अच्छे ज्ञाता थे। उनकी कुरान की आयतें सुनकर बड़े-बड़े मौलवी भी दाँतों तले अंगुली दबाते थे। उन्हें सुनने आर्यसमाज के जलसों में हजारों की भीड़ उमड़ती थी। ऐसे मधुरभाषी वक्ता पर परेशान हुकूमत ने धर्म के अपमान का आरोप लगा कर बीदर की अदालत में चालान पेश कर दिया। इस मुकदमे के कारण सारे भारत में क्रोध की लहर दौड़ गई। बंसीलालजी व श्यामलालजी राज्य भर में जोर-शोर से आर्यसमाज का प्रचार करते थे, उनकी जान को हर समय खतरा लगा रहता था। सरकार और रजाकारों की ओर से उन्हें खतम करने के लिये अनेक षड़यंत्र रचे जा रहे थे। गुंजोटी में वेदप्रकाश की हत्या हुई। प्रथम शहीद के बलिदान पर उत्तेजित पच्चीस हजार की भीड़ को बंसीलालजी ने अपने उद्‌बोधन से शान्त किया। अनेक आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं पर अत्याचार जारी रहे।

१९३८ में हर वर्ष की तरह आर्यसमाज उदगीर की ओर से होली का जुलूस निकाला गया। अचानक मुसलमानों ने हमला कर दिया, दोनों ओर के लोग जखमी हुए और एक व्यक्ति मारा गया। इसी बहाने भाई श्यामलाल जी को सोलह साथियों सहित हत्या के आरोप में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

श्यामलालजी पर भी गोली दागी गई, जबकि वे वातावरण शान्त करने में व्यस्त थे। उन्हें अपनी मोटर में छोड़ने के बहाने पुलिस धोखे से पुलिस स्टेशन ले गई। जन विक्षोभ को देखते हुए उनको बीदर जेल ले जाया गया। उदगीर की जनता के विरोध प्रदर्शन पर लाठी चार्ज हुआ। बीदर जेल का जेलर श्यामलाल जी से प्रभावित होकर उनका भक्त बन घर से दूध फल लाकर देता था। उसकी बदली कर दी गई। नए जेलर ने हथकड़ी बेड़ी लगवा दी। दैनिक संध्या हवन पर बन्दी लग गई। जेल के भोजन से वे बीमार पड़ गए। दवाई के नाम पर दरोगा ने जहर गले में उतार दिया। डॉक्टर को बुलाना दूर, प्यास लगने पर पानी भी नहीं दिया। भाईजी ने विष का अंदाज होने पर पत्र लिखा व एक साथी को बंसीलालजी तक पत्र पहुँचाने की विनती की। सारी तकलीफ ओ३म् का जप करते हुए सहन की। १७ दिसम्बर १९३८ को श्याम भाई ने प्राण त्याग दिये।

भाई श्यामलालजी के बलिदान से राज्यभर में कोहराम मच गया। आर्यों का लोकप्रिय, हृदय, प्राण, दुःखों का साथी, हिन्दुओं का रक्षक उनके लिए अपने जीवन की आहुति दे गया था। शव सोलापुर ले जाकर डाक्टरों द्वारा विच्छेदन कर विषबाधा मृत्यु का कारण निश्चित किया गया। अंतिम दर्शन के लिए हजारों की भीड़ उमड़ पड़ी। निजाम के विरुद्ध जनमानस का असंतोष भारत भर में चरम सीमा तक पहुँच चुका था। अंततः सार्वदेशिक आर्य सभा दिल्ली की ओर से ऐतिहासिक हैदराबाद सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया गया।

भारत भर से सत्याग्रहियों के जत्थे पर जत्थे हैदराबाद पहुँचने लगे। महात्मा नारायण स्वामी, कुँवर चाँद करण शारदा, लाला खुशहालचन्द, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, वेदव्रत आर्य, महाशय कृष्ण, पं. ज्ञानेन्द्र व पं. विनायकराव विद्यालंकार के नेतृत्व में सत्याग्रहियों की भीड़ जमा होती गई। हैदराबाद केन्द्रीय कारागार

में ही तीन हजार के लगभग सत्याग्रही थे। कुछ जत्थों को रास्ते में ही रोक कर गुलबर्गा, अहमदनगर, नान्देड़, औरंगाबाद आदि जेलों में ठूंस दिया गया। निजाम सरकार की सारी जेलें भर जाने पर खुले मैदानों में बाढ़ बनाकर कंकड़ियों की फर्श पर जेलें बनाई गईं। जेलों की बदइंतजामी, खराब भोजन व इलाज के कारण इक्कीस महानुभावों की जान कुरबान हो गई और सैकड़ों बीमार हो गए। हवन सत्संग के लिये जेल में अनशन करना पड़ा और सारी जेलें वेद मंत्रों व भजनों से गूँजने लगीं। इतने बड़े पैमाने पर बिलकुल अहिंसक सत्याग्रह की धुरी पं. बंसीलाल जी ने, आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के मंत्री के रूप में, सम्भाल रखी थी। भारत भर से आये सत्याग्रहियों, नेताओं की व्यवस्था, आने-जाने, स्वागत का प्रबन्ध सारी जिम्मेदारी आपने ही उठा रखी थी। संगठन कुशलता व नेतृत्व का अनुपम उदाहरण आपने प्रस्तुत किया।

आर्य जनता के इस विराट अहिंसक प्रदर्शन से निजाम सरकार घबरा उठी। निजाम के नियंत्रण के बावजूद सारे देश की आर्य पत्र पत्रिकाओं में सत्याग्रह की खबरें छपती जा रहीं थीं। इंग्लैंड की पार्लियामेन्ट में भी इसकी गूँज सुनाई दी। आर्यसमाज के नेता दिल्ली में महात्मा गाँधी के सम्पर्क में थे, उन्होंने भी निजाम के प्रधान मंत्री सर अकबर हैदरी से सम्पर्क कर प्रभाव डाला कि आर्यसमाज की सभी माँगों को मान लिया जाए। अंततः शक्तिशाली निजाम को घुटने टेकने पड़े। आर्यसमाज की सभी माँगें मान ली गईं। इस सत्याग्रह में हैदराबाद की अन्य संस्थाओं जैसे हिन्दू महासभा, महाराष्ट्र परिषद्, आदि का भी सहयोग मिला। भारत भर से आर्यजनों ने जो विशाल धन राशि इस हेतु भेजी थी, उसमें से बची हुई राशि सोलापुर में सत्याग्रह के स्मारक रूप दयानन्द कॉलेज खोलने के लिए बंसीलाल जी के सुपुर्द कर दी गई। इसी बीच उन्हें तीसरे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई, इस जीत के उपलक्ष्य में उसका नाम विजय रखा गया। सरदार पटेल ने पुलिस एक्शन का बाद में वर्णन करते हुए स्वीकारोक्ति दी थी कि यदि आर्यसमाज ने हैदराबाद सत्याग्रह नहीं किया होता तो हमें (भारत सरकार को) तीन दिन में सफलता मिलनी सम्भव न थी।

आर्यसमाज का प्रचार करते हुए नानाजी ने अपनी चार संतानों के साथ-साथ कतिपय परिवारों के बच्चों को भी उत्तर भारत के गुरुकुलों में प्रवेश दिलवाया था। उनकी हार्दिक कामना थी कि दक्षिण भारत में भी गुरुकुल स्थापित हों। इस प्रकार श्यामार्य गुरुकुल की स्थापना हुई और बंसी भाई प्राणपण से गुरुकुल चलाने में जुट गए। लड़कों के बाद पृथक् कन्या गुरुकुल भी महर्षि दयानन्द की बताई शिक्षा पद्धति पर चलने लगा। उनके अपने दोनों बेटे व दोनों बेटियों को भी श्यामार्य गुरुकुल में ले आए। धीरे-धीरे छात्र-छात्राओं की संख्या बढ़ने लगी और राजूर की जगह छोटी पड़ने लगी। बार्शी में गुरुकुल स्थानांतरित हुआ। आर्यसमाज का प्रचार जारी था। स्वतंत्रता युद्ध भी। कई बार रजाकारों द्वारा उन पर हमले हुए, पर अपने गुरु महर्षि दयानन्द के समान हमलावरों को क्षमा करते रहे। सरकार भी उन पर नजर गड़ाए थी। पर अपनी जागरूकता व नीति के कारण निजाम के चंगुल से अपना बचाव करते रहे।

- अपर्णा शुक्ला
२०५ अथ श्री सिनर्जी पाटील नगर, पुणे (महाराष्ट्र)
चलभाष- ९३२२२९५९३२

आजीवन सत्यार्थमित्र

सत्यार्थमित्र योजना में प्रतिवर्ष 5100 रुपए देने के क्रम में कुछ बन्धु प्रतिवर्ष रिन्यूअल कराने के झंझट से विरत रहना चाहते हैं, अतः न्यास ने अपनी पिछली बैठक में यह निश्चय किया है कि आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में जो भाई बहिन रु. 51000 एकमुश्त जमा करा दें तो उनका यह सहयोग आजीवन सत्यार्थमित्र के रूप में मान्य होगा। समर्थ आर्यजन इस दिशा में सकारात्मक सहयोग करने का श्रम करें।

महर्षि दयानन्द

की २००वीं जयन्ती पर महर्षि दयानन्द के दो सौ उपकार

गतांक से आगे......

- विवाह में गुण कर्म स्वभाव को आवश्यक बताया।
- वानप्रस्थ की आवश्यकता एवं उपयोगिता बताई।
- सन्यासियों का महत्व और कार्य बताया।
- सोलह संस्कार सिखालाया, मानव निर्माण के लिये संस्कार विधि जैसा ग्रन्थ लिखा।
- बाल शिक्षा सिखाई।
- जन्म पत्र को शोक पत्र बताया।
- 'माता निर्माता भवति' बताया।
- बालक के लिए माता की शिक्षा सर्वोच्च बताई।
- बालक-बालिका के लिए अलग-अलग शिक्षणालय की अनिवार्यता बताई।
- अनिवार्य शिक्षा के महत्व को बताया।
- पाठशाला ना भेजने पर माता-पिता को दोषी बताया।
- विद्या काल में समान भोजन-वस्त्र-व्यवहार सिखाया।
- आर्ष शिक्षा का महत्व बताया।
- अनार्ष शास्त्रों की पहचान बताई।
- ऋषि कृत ग्रन्थों का महत्व बताया।
- ऋषियों के ग्रन्थों में मिलावट को हटाया।
- पठन-पाठन व्यवस्था सिखाई।
- ब्रह्मा से लेकर जैमिनी के तथ्यों को अपना मन्तव्य बताया।
- महापुरुषों पर लगे दोषों को हटाया।
- योग विद्या सिखाई।
- अष्टांग योग सिखाया।
- प्राणायाम का महत्व बताया।
- किसी व्यक्ति विशेष की पूजा का निषेध किया।
- गुरुडम का खण्डन किया।
- पाखण्ड का गढ़ ढ़ाया।
- अंधविश्वास को दूर भगाया।
- यज्ञों में हिंसा का पुरज़ोर खण्डन किया।
- नरबलि को कलंक बताया।
- कर्मकाण्ड की शुद्धि करवाई।

☞ पंच महायज्ञ को प्रचलन करवाया।
☞ जादू-टोना टोटका को दूर भगाया।
☞ भूत-प्रेत का डर दूर भगाया।
☞ पूर्वजन्म पुनर्जन्म के महत्व को बताया।
☞ कर्मफल व्यवस्था का सार समझाया।
☞ यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ पूजा बताया।
☞ यज्ञ को पर्यावरण के लिए अत्यावश्यक बताया।
☞ गृहस्थाश्रम के पंच महायज्ञ अनिवार्य बताया।
☞ सन्ध्या की विशेषता बताई।
☞ सन्ध्या की विधि सिखलाई।
☞ परमेश्वर को ही उपासनीय बताया।
☞ सभी प्राणियों में ईश्वर को व्याप्त बताया।
☞ अहिंसा का पाठ पढ़ाया।
☞ शाकाहार का महत्व बताया।
☞ मन्दिरों पर चढ़ रहे बलि को निषेध किया।
☞ आहार-विहार के पचड़े को मिटाया।
☞ शूद्र से भोजन व्यवस्था को सही बताया।
☞ व्रत के महत्त्व को बताया।
☞ फलित ज्योतिष की सच्चाई बताई।
☞ ग्रह-नक्षत्रों के प्रभाव को अन्धविश्वास बताया।
☞ कर्मानुसार सुख-दुःख बताया। क्रमशः ....

ऋषि चरणानुरागी
-आचार्य राहुलदेवः

विश्व भर से आने वाले पर्यटकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

आदरणीय अशोक आर्य जी का यह श्रमसाध्य कार्य विश्व में प्रशंसनीय है। ऐसे कार्यों से आर्य सिद्धान्तों एवं आर्य समाज को गति मिलेगी। भारत के सभी प्रमुख शहरों में ऐसे प्रशंसनीय चित्रांकन, संस्कार वीथिका एवं बढ़िया स्तर पर चलचित्र आदि का निर्माण होना चाहिए। क्रान्तिकारी कार्य के लिए ढ़ेरों बधाइयाँ।

– विश्व बन्धु शास्त्री; रोहिणी-दिल्ली

नमस्ते जी। मेरे लिए परिवार सहित यहाँ आना अपने मूल जड़ों की ओर लौटने जैसा है। इस वीथिका में हमारी संस्कृति का सुन्दर वर्णन, संस्कारों के प्रदर्शनी, भारतीय राष्ट्रवाद की प्रारभूति, स्वतंत्रता सेनानियों की वीथिका अत्यन्त अनुभूति देने वाली है। यहाँ के गाइड जी ने सुन्दर वर्णन किया है। इस स्थान को देखकर लगता है आर्य समाज ही पुनः भारत वर्ष को विश्व गुरु बनायेगा।

– अनिरुद्ध गर्ग, उत्तर प्रदेश

Respected sir, On behalf of Witty International School Udaipur we take this opportunity to thank you for allowing us to visit navlakha Mahal gulab Bagh Udaipur . It was a wonderful experience for our students to learn so many informative things. Thank you for making our visit a memorable and enriching experience for all of us. We are grateful to you and look forward for more interaction in future also.

- Deepa Chakraborty, principal CAIE

वेदों में विज्ञान के उद्घोषक

②

ऋषि दयानन्द

गतांक से आगे .....

वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष ऋषि दयानन्द की अत्याधुनिक आर्ष दृष्टि का प्रमाण है। यह २१वीं सदी विज्ञान की सदी घोषित हो चुकी है। इस सदी में विज्ञान के अत्यन्त चामत्कारिक आविष्कार विश्व के समक्ष आ चुके हैं तथा अभी और भी अनेक आविष्कार होने हैं। कम्प्यूटर और इन्टरनेट की खोज आज के भौतिक विज्ञान का उत्कृष्ट चमत्कार है। क्लोन बेबी का आविष्कार विज्ञान का एक अद्भुत नमूना है। रोबोट अनेक क्षेत्रों में मनुष्य का स्थान ले रहा है। ऋषि दयानन्द की आर्ष-दृष्टि से यह ओझल नहीं था। भौतिक विज्ञान विश्व में आँधी की तरह फैल रहा है और आधुनिक मनुष्य उसमें उड़ा जा रहा है। जितना भौतिक विज्ञान बढ़ रहा है, धार्मिक साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों की जंजीर उतनी ही ढीली होती जा रही है। विज्ञानवाद के सामने साम्प्रदायिक अन्धविश्वासों को बनाये रखना धार्मिक (साम्प्रदायिक) गुरुओं के लिये कठिन होता जा रहा है, उनकी गद्दी बचाये रखने के लिये आज का भौतिक विज्ञान एक बहुत बड़ा अपरिहार्य खतरा और चैलेन्ज बन गया है।

किन्तु ऋषि दयानन्द की यह स्थापना थी कि विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी नहीं हैं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं और धर्म का आधार विज्ञान अर्थात् प्राकृतिक नियम, युक्ति और तर्क ही हैं। धर्म वही टिक सकेगा जो विज्ञान को साथ लेकर चले। इसलिये उन्होंने वेद में भौतिक विज्ञान की घोषणा की। केवल घोषणा ही नहीं अपितु वेद के मन्त्रों के आधार पर उन्होंने भौतिक विज्ञान के ऐसे नमूने प्रस्तुत किये कि जिनका आविष्कार उस समय तक नहीं हुआ था। सृष्टि के प्रारम्भ में प्राणी जगत् बिना मैथुन (अमैथुनी सृष्टि) के पैदा हुआ, ऋषि दयानन्द का यह उद्घोष आज के विज्ञान से क्लोन बेबी के आविष्कार से पुष्ट हो चुका है। पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य ग्रहों पर भी जीवन है, यह तथ्य आज के विज्ञान, नासा की खोज के द्वारा पुष्ट हो गया है, जिसे ऋषि दयानन्द ने शतपथ ब्राह्मण काण्ड १४ **'एते हीदं सर्वं वासयन्ते'** इत्यादि के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश के ८वें समुल्लास में सन् १८७५ में ही लिख दिया था। प्रलय में काल की सत्ता और प्रलयकाल की अवधि आज के सृष्टिविज्ञान वेत्ता स्टीफन्स हाकिन्स ने अब सिद्ध की है जिसे महर्षि दयानन्द ने अपने 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' में १३५ वर्ष पहले लिख दिया था और जिसे अथर्ववेद के काण्ड १९ सूक्त ५३, ५४ में लाखों वर्ष पहले बड़े विस्तार से कालविषयक सूक्त में निरूपित कर दिया था, तथा जिस काल का विशद् विवेचन भारतीय ज्योतिष शास्त्रों में हजारों वर्ष पहले भारतीय ऋषि कर चुके थे और जो कालगणना भारत की विवाह संस्कार आदि की संस्कार परम्पराओं में सुरक्षित रखी जाती हुई ऋत्विक, पुरोहित आदि द्वारा निरन्तर सतत् पढ़ी जाती रही। विज्ञान की आधुनिकतम खोज गोल्ड बोसेन द्वारा गोड्ज पार्टिकल (Gods particle) को भारत के हजारों

वर्ष पुराने वैशेषिक दर्शन के परमाणुवाद, कपिल मुनि के सांख्य दर्शन के प्रकृतिवाद और ऋग्वेद के नासदीय सूक्त (मण्डल १० सूक्त १२९) में खोजा जा सकता है। ऋषि दयानन्द से भी हजारों वर्ष पहले यास्काचार्य ने भी अपने निरुक्तशास्त्र में वेदों में भौतिक विज्ञान का उद्घोष कर दिया था। सूर्य पर जीवन आधारित है- यह तथ्य बतलाते हुए यास्काचार्य ने वैदिक शब्द **'असुर'** की निर्वचनीय व्याख्या **'असून् प्राणान् राति ददतीत्यसुरः'** (सूर्य में ही प्राणदायक जीवनदायक शक्ति है) ऋग्वेदीय मन्त्र **'असुरत्वमेकम्'** में सूर्य का विशेषण **'असुर'** के प्रयोग में की। आज स्टीफन्स हाकिन्स कहता है कि धरती पर जीवन तब तक है जब तक सूर्य की सत्ता है, यास्काचार्य ने यह चेतावनी हजारों वर्ष पहले ही दे दी थी। इसीलिये प्रश्नोपनिषद् का ऋषि पिप्पलाद कहता है कि आदित्य सब प्राणों को अपनी रश्मियों में धारण करता है- **(यत्सर्वं प्रकाशयति तेन सर्वान्प्राणान् रश्मिषु सन्निधते**- प्रश्नोपनिषद् १.६)।

सौर ऊर्जा (सोलर एनर्जी) यजुर्वेद के **'इषे त्वोर्ज्जे त्वा.** (अ.१ म.१) में सविता (सूर्य) में ऊर्जा के ज्ञापन द्वारा बतला दी। वेद में **'वैश्वानर'** शब्द की व्याख्या द्वारा हजारों वर्ष पहले यास्क आचार्य ने अपने निरुक्त शास्त्र में वैज्ञानिक पद्धति के परीक्षणात्मक प्रयोग द्वारा यह सिद्ध कर दिया था कि सूर्य ही अग्नि का मूल स्रोत है और भूमि की अग्नि सूर्य के कारण ही है, जिस तथ्य को स्टीफन्स हाकिन्स आज कह रहे हैं। वैदिक विज्ञान से अनभिज्ञ लोग कह देते हैं कि जब आज का वैज्ञानिक कोई आविष्कार कर देता है तो वैदिक विद्वान् कहने लगते हैं कि यह तो वेद में विद्यमान है। क्या ये ऊपर दर्शाये गये ये वैदिक विज्ञापन के नमूने आधुनिक आविष्कारों के बाद के है? मूर्ख लोगों की आँख अभी भी नहीं खुले तो कभी भी नहीं खुलेंगी।

ऋषि दयानन्द ने यास्काचार्य द्वारा प्रदर्शित वेदभाष्य की यौगिक (योगरूढ़) पद्धति के आधार पर ही अपना वेदभाष्य किया। ऋषि दयानन्द ने अपनी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के 'वेदविषयविचार' के प्रसंग में तथा अपने वेद भाष्य में अग्नि, वायु, जल आदि देवता वाले मन्त्रों में यथा स्थान भौतिक विज्ञान को ही उजागर किया, जिसके लिए यास्क ने निरुक्त में कहा था-

'तिस्र एव देवता, अग्निःपृथ्वीयस्थानीयः वायुर्वेन्द्रो वाऽन्तरिक्षस्थानीयः सूर्योद्युत्स्थानीयः।'

आधुनिक मानव और विशेषतः आज का नवयुवक आधुनिक भौतिक-विज्ञान पर फिदा है और बात है भी सही। एक मुस्लिम युवक यदि कुरान शरीफ में सृष्टि निर्माण की व्याख्या पढ़ेगा कि खुदा ने कुछ कहा और सृष्टि बन गई। तथा वही युवक विद्यालय या महाविद्यालय में विज्ञान की पुस्तकों में सृष्टि की उत्पत्ति विज्ञान के आधार पर पढ़ेगा तो वह कुरआन शरीफ को ताक पर रख देगा। इसी प्रकार एक क्रिश्चियन नवयुवक बाइबिल में सृष्टि रचना के सम्बन्ध में पढ़ेगा कि ईश्वर (गॉड) ने छः दिन तक सृष्टि रचना की और सातवें दिन रविवार को विश्राम किया। तथा वही युवक विद्यालय या महाविद्यालय में विज्ञान की कक्षा में सृष्टि रचना इससे भिन्न प्रकार से पढ़ेगा तो उसका विश्वास बाइबिल पर से हट जायेगा। यही स्थिति एक पुराण पाठक छात्र के साथ भी होगी। किन्तु एक वैदिक छात्र का विश्वास वेद पर और भी दृढ़ हो जायेगा जब वह सृष्टि रचना का प्रकार वेद में भी वही पढ़ेगा जो विज्ञान में वर्णित है यहाँ तक कि आज के विज्ञान के इन्टरनेट और ग्लोबलाइजेशन की अवधारणा वेद के मन्त्र **'यत्र विश्वभवत्येकनिडम्'** (वह मन्त्र जिसमें समूचा विश्व एक घोसले जितने रूप में माना जाता है) में देखी जा सकती है। वेद इसीलिये अत्याधुनिक (अल्ट्रा माडर्न) और सर्वकालिक है।

आधुनिक मानव और आज का युवक विज्ञान की बात करता है अतः सभी सम्प्रदाय विज्ञान से भयभीत हैं। जितना-जितना विज्ञान बढ़ता है सभी सम्प्रदाय प्रभावहीन होते जा रहे हैं। केवल वैदिक धर्म ऐसा है

जो विज्ञान का स्वागत करता है। अतः विज्ञान की बढ़त के साथ ही वैदिक धर्म दृढ़ और स्थायी होता जाता है। ऋषि दयानन्द का यही आर्ष दर्शन है। अतः आर्य बन्धुओ! आपको आधुनिक विज्ञान से डरने की आवश्यकता नहीं है, आप उसका स्वागत कीजिये। ज्यों-ज्यों विज्ञान बढ़ेगा, अन्य सम्प्रदाय स्वतः ही नीचे, (समाप्त) होते जायेंगे, केवल वैदिक धर्म का झण्डा ऊँचा जाता जायेगा।

वैदिक विज्ञानवाद महर्षि दयानन्द की सुदीर्घ दूरदर्शिता है जो भारत तथा आर्य समाज को सदैव आधुनिक, प्रासंगिक और समसामयिक बनाये रखेगी। आधुनिक मस्तिष्क और विशेषतः आधुनिक युवक और नई पीढ़ी में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार का यह अमोघ अस्त्र है। अतः यह आवश्यक है कि वैदिक प्रचार और प्रसार के लिये वेद में विज्ञान के नये आविष्कार खोजे जायें, वैदिक अध्यात्मवाद और 'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' की वैदिक भ्रातृभाव की भावना को फैलाया जाये तो आधुनिक सम्प्रदायवाद पर आधारित आतंकवाद का युक्तियुक्त सशक्त समाधान भी होगा और निश्चित रूप से आज का नवयुवक और नई पीढ़ी वेद तथा आर्यसमाज की ओर आकर्षित होगी और वेद का **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का उद्घोष सार्थक होगा। आज के विज्ञान के युग में विश्व को भारत की प्राचीनतम अस्मिता का परिचय वेद के नाम/आधार पर ऋषि दयानन्द ही दे सकता है। विज्ञान, धर्म और अध्यात्म का समन्वय केवल वेद में ही अन्तर्निहित है जिसके आधुनिक युग के पुरोधा ऋषि दयानन्द हैं।

लेखक- डॉ. महावीर मीमांसक
ए-३/११, पश्चिम बिहार, दिल्ली
चलभाष- ९८११९६०६४०

सामवेद पारायण यज्ञ पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर की ओर से चल रहे जन कल्याणार्थ आयोजित सामवेद पारायण यज्ञ का दिनांक २२ अक्टूबर २०२३ को पूर्णाहुति के साथ समापन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य सोमदेव जी आर्य के सान्निध्य में हिरण मगरी क्षेत्र एवं नगर के अनेकों यजमानों ने दैनिक यज्ञ के साथ सामवेद के १८७५ मंत्रों की आहुतियाँ दीं। ब्रह्मचारी शिवम् व विश्वबन्धु ने वेद पाठ किया। पं. इन्द्र देव पीयूष ने भजन प्रस्तुत किये। अखिलेश शर्मा ने तबले पर संगत दी।

तीन दिन तक चले इस पारायण यज्ञ में आचार्य सोमदेव जी आर्य ने अनेकों मंत्रों की व्याख्या की। आपने अपने व्याख्यानों में ईश्वर व वेद का ज्ञान सर्वोपरि है बताये। साथ ही मनुष्य के कल्याण के लिए वेद-सत्संग, यज्ञ-हवन, प्राणायाम, सात्त्विक भोजन, स्वाध्याय, गो-सेवा, ऊषा पान, जितेन्द्रियता, दयालुता, दाता भाव, नम्रता आदि को जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। यज्ञ सत्संग के विभिन्न सत्रों मे श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास के अध्यक्ष-श्री अशोक आर्य, मंत्री-भवानी दास आर्य, नगर आर्य समाज के प्रधान-श्री प्रकाश श्रीमाली, मंत्री-सत्यप्रिय शास्त्री, डॉ. प्रेमचन्द गुप्ता, हिरण मगरी आर्य समाज के संरक्षक डॉ. अमृत लाल तापड़िया, संजय शांडिल्य, अम्बालाल सनाढ्य, रमेशचन्द्र जायसवाल, श्याम बाबू, हजारी लाल आर्य, हरि भाई, एडवोकेट अरविन्द त्यागी, अनन्त देव शर्मा, शारदा गुप्ता, सरला गुप्ता, कृष्ण कुमार सोनी, राजकुमार गुप्ता आदि आर्यजनों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। प्रारम्भ मे आर्य समाज के प्रधान भँवर लाल आर्य ने सभी का स्वागत किया। मंत्री वेद मित्र आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम सत्रों का संचालन भूपेन्द्र शर्मा के द्वारा किया गया।

- रामदयाल मेहरा

ब्रह्म मुहूर्त में उठे विचार

भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण ने अपने यौवन काल में ही प्रजा में सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षा के लिए ही रावण और कंस जैसे अनेक दुष्ट शासकों को अपने सात्विक बल-बुद्धि-पराक्रम के द्वारा ही राजसिंहासन से उतारा था चाहे इस कार्य में उनका वध ही क्यों ना करना पड़ा। उन्हीं सिंहासनों पर स्वयं न बैठकर वहीं के श्रेष्ठ धार्मिक आर्यों को बैठाया है। उन आदर्श स्वरूप श्रीराम एवं श्रीकृष्ण आदि महान् पुरुषों में ऐसी शक्ति के संचार का मुख्य स्रोत वेद ज्ञान पर आधारित प्रभु भक्ति ही है।

अतः जो भी व्यक्ति या शासक ईश्वर और धर्म के बारे में प्रभु प्रदत्त वैदिक ज्ञान से स्वार्थवश दूर-दूर रहकर स्वयं व अपने आश्रितों को भी अज्ञान-अविद्या से ग्रसित स्वयं की मान्यताओं रूपी घनघोर अंधेरे में जकड़ कर सत्य ज्ञापन से कोसों दूर रखते हैं। परमपिता परमेश्वर भी आपत्ति- विपत्ति में कभी उनका शासक और नागरिकों का साथ नहीं देते। प्रभु की कृपा रूपी आशीर्वाद उनके साथ नहीं रहता। बल्कि प्रभु का अभिशाप ही उन्हें दर-दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देता है। भारत में अब हिन्दू कहकर पुकारे जाने वाले लोगों के साथ विगत लगभग ३५०० वर्षों से ऐसा ही खेल खेला जा रहा है।

दीपावली की रात धनुर्धारी भगवान श्रीराम का चरित्र ही नहीं बल्कि भगवान श्रीराम के पद-चिह्नों पर चलते हुए चक्रधारी भगवान श्रीकृष्ण की भी याद आती है। इनके साथ-साथ उन महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति भी सदा बनी रहने की कामना रहती है। जिन्होंने श्रीराम और श्रीकृष्ण के निष्कलंक उज्ज्वल चरित्र पर अवतारवादी मूर्तिपूजकों द्वारा भागवत आदि पुराणों की कथा के माध्यम से लगाई गई अनार्यत्व की कालस को अपनी कलम से सदा के लिए साफ कर दिया है। श्रीराम और श्रीकृष्ण के चमकते हुए उज्ज्वल चरित्र को पुनः हिन्दुओं के दिलों में स्थापित कर आर्य बनने को फिर से उत्सुक कर दिया है।

हे परमपिता परमेश्वर! हम देशवासियों विशेषकर राष्ट्र प्रेमियों में ऐसी प्रेरणा भरो कि हम सब विचार शून्यता को बनाए रखने वाली जड़-मूर्ति-पूजा और बल-बुद्धि को नष्ट करने वाली शराब आदि नशे की आदत, मांसाहार का प्रचलन तथा व्यभिचार को हमेशा के लिए त्याग दें ताकि लगभग १५०० वर्षों से हिन्दू नाम से पुकारे जाने वाले हम सब फिर से आर्य बनने बनाने के सत्य सनातन वैदिक रास्ते पर चल पड़ें। जिसके परिणाम स्वरूप श्रीराम और श्रीकृष्ण की भाँति संगठित होकर हम सब सम्पूर्ण भारत से राज्य व्यवस्था में अंग्रेजियत और विदेशी षड्यंत्रों का शत प्रतिशत बहिष्कार कर सकें। तत्पश्चात् वैदिक विद्या, चिकित्सा और न्याय प्राप्त करने में नागरिक को व्यक्तिगत रूप में एक रुपया भी खर्च ना करना पड़े, ऐसी राज-धर्म समन्वित वर्णाश्रम व्यवस्था को स्थापित करने वाली वैदिक सामाजिक व्यवस्था को पुनः कायम करने में सफलता प्राप्त कर सकें।

– वेद प्रकाश आर्य
एम.ए.द्वय,संरक्षक चरित्र निर्माण मण्डाल
सैनी मोहल्ला, ग्राम-शाहबाद मोहम्मदपुर
नई दिल्ली-६१, चलभाष- ९३११८०१२१२

शंका- इन प्रमाणों को पढ़कर भी कई थोड़ी बुद्धि के पुरुष शंका किया करते हैं कि यदि हनुमान आदि बन्दर न थे तो उनको वानर, कपि और प्लवग आदि क्यों कहा जाता है, जो कि प्रायः बन्दरों के नाम हैं?

उत्तर- हनुमान आदि के ये सब नाम उनके गुण-कर्मों के अनुसार हैं। हनुमान् ने स्वयं सीता से लंका में कहा है। - देखो सु. ३५/८१ और कि. का. स. ६६/२४

परन्तु स्पष्टीकरणार्थ हम इनके अर्थ

१. शब्द कल्पद्रुम २. शब्दार्थ चिन्तामणि ३. पद्मचन्द्र ४. शब्दस्तोयमहानिधि और ४. वाचस्पत्य वृहद्विधान आदि संस्कृत के प्रतिष्ठित कोषों में से लिख देते हैं। जिन्हें सन्देह हो, वहाँ देख लें।

१. प्लवग- का अर्थ है नौका व तुलाओं से तरने वाला, क्योंकि प्लव का अर्थ है जलतरण-साधन। - देखो मुण्डकोपनिषद् १/२/७

२. वानर का अर्थ है, वन के फल-मूल खाने वाला निरामिषभोजी आर्य। यथा-

'वने भवं वानं। वानं राति गृहणातीति।'

३. कपि का अर्थ है- **कं जलं पिबेतीति।**
कात् आत्मानं पाति रक्षतीति।
कम्पते पापात् सदा वा 'कपि'

१. मद्यादि त्याग, जल पीने वाला २. समुद्र जल में भी अपनी आत्मा की रक्षा करने वाला तथा सदा पापों से डरने वाला पुरुष कपि है और ये सब गुण हनुमान में थे। हनुमान उनका इसलिए नाम था कि उनकी ठोड़ी टेढ़ी थी।

कई लोगों के मत में प्लवग का अर्थ लम्बा कूदने वाला है। इस जाति के पुरुष क्योंकि बन्दरों की भाँति बड़ी-बड़ी कूदें लगा सकते थे इसलिए इनका नाम प्लवग था। अब भी बहुत से पुरुषों के वीर और कायर स्वभाव को देखकर प्रायः लोग उन्हें सिंह और गीदड़ की उपाधियों से बुला ही लिया करते हैं।

वानर उस समय एक जाति(आर्य जाति की उपजाति) थी जिसके पुरुषों में कुछ नियम ढीले पड़ गये थे।

प्रश्न- क्या कोई वानर जाति भी थी?

उत्तर- हाँ, जैसे नाग, पतंग, यक्ष, देव, गन्धर्व स्वभाव और कर्मों से मनुष्य जाति के भेद हैं, वैसे ही वानर जाति भी थी।

प्रश्न- नाग सर्प को और पतंग पक्षी को कहते हैं इन्हें मनुष्य किसने माना है ?

उत्तर- सब ऋषियों ने। देखो, महाराज जटायु पतंग जाति के ब्राह्मण और नागों के नाग वंशी राजपूत अब तक भारत के भिन्न-भिन्न प्रान्तों में हैं। मध्यभारत का प्रधान नगर 'नागपुर' इसी वंश के अगुआ ने बसाया था और अगस्त्य मुनि के आश्रम में इन सब जातियों के विद्यार्थी पढ़ते तथा धर्मानुष्ठान करते थे। - देखो (वा. रा. अ. कां. ११/६१)।

यत्र देवाश्च यक्षाश्च नागाश्च पतगैः सह।
वसन्ति नियताहारा धर्मे माराधयिष्णवः ।।

विदेशियों की सम्मति- आजकल क्योंकि विदेशियों की राय अधिक विश्वास योग्य मानी जाती है, अतः हम नीचे एक अंग्रेज की राय उद्धृत करते हैं-

'संस्कृत कोशों में वानर उसको लिखा है, जो वन में रहे और अपनी आयु वन के फलों पर काटे। वास्तव में ये लोग किसी समय इसी भाँति अपना जीवन व्यतीत करते थे और भील तथा गोंड लोगों के समान रहते थे।' (देखो, पिक्चर्स ऑफ इण्डिया पृष्ठ १६६/१६१)

प्रश्न- क्या जिस प्रकार गुण-कर्मों को देखकर हनुमान आदि की वानर संज्ञा हो गई थी, इस समय भी किसी मनुष्य या मनुष्य समुदाय की पशु-पक्षी संज्ञा हुई है?

उत्तर- हाँ, आजकल भी बहुत से समाजों या पुरुषों को उनके कर्म को देखकर वैसे नामों से ही बोला वा बुलाया जाता है जैसा कि अभी थोड़े दिनों की बात है कि जब रूस और जापानियों का युद्धारम्भ हुआ तो जापानियों की कूद-फाँद

देख रूसियों ने उनका नाम (यलो मन्की) 'पीले बन्दर' रख दिया था क्योंकि जापानियों का रंग कुछ पीला होता है। यह शब्द वर्षों तक रूस में जापानियों के लिए प्रचलित रहा। रूसी पुरुषों को आज भी सारे योरुप में 'रूसी रीछ' कहकर पुकारते हैं। इसी प्रकार 'ब्रिटिश सिंह' और 'जान बुल' का शब्द अंग्रेजों के लिए प्रचलित है। वस्तुतः जो केवल शब्द को लेते हैं और अर्थ को नहीं सोचते वे सदा भ्रम में पड़े रहते हैं ।

वानर जाति सभ्य एवं सुसंस्कृत थी। महावीर हनुमान के परिचय-प्रसंग में वानर जाति की सभ्यता और संस्कृति की एक झलक हम देख चुके हैं। सुग्रीव के श्वसुर सुषेण का आयुर्वेद-ज्ञान, विदुषी तारा का राजनीति-ज्ञान,नल और नील का अपूर्व शिल्प-ज्ञान, किष्किन्धा नगरी का वैभव, बाली और सुग्रीव की शासन-नीति के प्रसंग में वानर जाति की उच्च सभ्यता दर्शनीय है। वेद, दर्शन, व्याकरण के पठन-पाठन और वैदिक संस्कारों के साथ ही वानर जाति में वर्ण-व्यवस्था का पालन भी होता था-

'पण्या पण्यवती दुर्गा चातुर्वर्ण्य पुरस्कृता' (उ. ३७/७)।

अर्थात् किष्किन्धा दुर्ग (नगरी) प्रशंसनीया क्रय-विक्रय योग्य और चारों वर्णों से सुशोभित थी। इस प्रकार के अन्य अनेकों प्रसंगों में वानर जाति की उच्च संस्कृति और सभ्यता की झाँकी मिलती है।

लेखक- (स्मृतिशेष) आचार्य प्रेमभिक्षु
मथुरा

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु, कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ के कवर पर दिया जावेगा।

1000 प्रतियों के प्रकाशन हेतु 25000 रुपये का दान देने का श्रम करें। 10 प्रतियाँ निशुल्क आपके पास भेजी जाएँगी।

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अन्तर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर खाता क्रमांक 310102010041518, IFSC-UBIN 0531014 में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

अशोक आर्य	भवानीदास आर्य	डॉ. अमृत लाल तापड़िया
अध्यक्ष-न्यास	मंत्री-न्यास	संयुक्तमंत्री-न्यास

बादाम
(गुण-कर्म एवं आत्ययिक प्रयोग)

आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य है- **'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं आतुरस्य विकार प्रशमनं च'** अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना एवं रोगी व्यक्ति के रोग का शमन करना। बीमार पड़कर औषध सेवन करके रोगों से मुक्त होने की अपेक्षा स्वस्थवृत्त के नियमों का पालन करके और सदवृत्त के आचरण से रोगी न होना अधिक श्रेयस्कर है। इसीलिए **'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्'** को आयुर्वेद में प्राथमिकता दी गई है। महर्षि चरक ने रसायन और वाजीकरण का उल्लेख चिकित्सा स्थान के प्रारम्भ में करके **'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्'** पर ही ज्यादा जोर दिया है। सर्दी के मौसम में जठराग्नि प्रदीप्त होती है, इस समय गरिष्ठ भारी भोज्य पदार्थ भी हजम हो जाते हैं। इसलिए इस मौसम में शक्तिवर्धक द्रव्यों के सेवन की प्रथा समाज में प्रचलित है। अधिकतर लोग यथासामर्थ्य सूखे मेवे व सौंठ-मरिच-पीपलामूल आदि द्रव्यों से निर्मित व्यंजनों का सेवन करके वर्ष भर के लिए शक्ति संचय कर निरोग रहने का प्रयत्न करते हैं। शरीर व मस्तिष्क की शक्ति बढ़ाने के लिए बादाम का बहुत प्रयोग किया जाता है। यह विटामिन E का अच्छा स्रोत होने से सौदर्यवर्धक भी है। अतः बादाम के गुण-कर्म एवं प्रयोग करने का ज्ञान होना आवश्यक है।

बादाम के गुण कर्म

रस- मधुर
गुण- गुरु, स्निग्ध
वीर्य- उष्ण
विपाक- मधुर
दोषघ्नता- वातशामक, पित्तश्लेष्मकर

प्रयोग- शारीरिक पुष्टि के लिए बादाम की गिरी १०, मुनक्का (द्राक्ष) १० जल में भिगो देवें। सुबह बादाम के छिलके व मुनक्का के बीज निकालकर अच्छी तरह पीस लें। इस मिश्रण को प्रातः खाली पेट गाय के दूध के साथ सेवन करने बहुत लाभ होता है।

वीर्य को गाढ़ा करने के लिए बादाम की गिरी ५ व १ ग्राम गिलोय सत्व मिलाकर अच्छी तरह पीसकर मिश्री तथा मक्खन मिलाकर चाटने से वीर्य में गाढ़ापन आता है।

मस्तिष्क दौर्बल्य में बादाम गिरी ५ नग लेकर रात्रि में भिगो देवें। प्रातः छिलका निकालकर बारीक पीस लें। इसमें थोड़ा-सा छोटी इलायची का चूर्ण डालकर १ चम्मच शहद के साथ चाटने से मस्तिष्क की दुर्बलता दूर होकर स्मरण शक्ति बढ़ती है।

सप्ताह में दो बार बादाम का सेवन करने वाले बादाम का सेवन नहीं करने वालों से कम मोटे होते हैं।

नेत्रों से अधिक जलस्राव हो तो २१ बादाम प्रतिदिन सेवन करें। बच्चे आयु के अनुसार मात्रा घटाकर लेवें। रात्रि के समय ८ बादाम सौंफ व मिश्री मिलाकर पेय पदार्थ बनाकर सेवन करने से दृष्टि शक्ति बढ़ती है। साथ में बादाम के तेल से निर्मित अंजन का प्रयोग करने से विशेष लाभ होता है।

अंजीर के साथ बादाम के सेवन से पुरानी कब्ज दूर होती है।

बादाम के छिलके को जलाकर इसकी राख से पाँचवा भाग में फिटकरी मिलाकर पीस लेवें। इसका मंजन करने से दाँत साफ रहते हैं व पायरिया आदि दन्त रोगों में लाभप्रद है। बादाम व केसर को गोघृत में मिलाकर नाक में डालने से शिरो रोग दूर होते हैं।

पीलिया- ६ बादाम, ३ छोटी इलायची व २ छुहारे मिट्टी के कोरे कुल्हड़ में भिगोवें। प्रातः बारीक पीसकर ७० ग्राम मिश्री व ५० ग्राम मक्खन मिलाकर चटावें। तीसरे दिन से ही काफी लाभ होकर पेशाब साफ आने लगता है।

झांई व धब्बे- पाँच बादाम की गिरी रात्रि में भिगो दें। प्रातः छिलका उतार कर खूब बारीक पीसकर शीशी में भर लें। इसमें ६० मि.ली. गुलाबजल व १५ बूँद चन्दन का इत्र मिलाकर हिलावें। चेहरे व बदन पर जहाँ भी घब्बे झाई हों वहाँ नित्य तीन बार लगावें। जहाँ गहरा धब्बा हो वहाँ ज्यादा मात्रा में लगी रहने दें। इससे झाई, धब्बे ठीक हो जाते हैं।

तुतलाना या हकलाहट- प्रतिदिन १२ बादाम भिगोकर छीलकर पीस लें। इसमें २५ ग्राम मक्खन मिलाकर कुछ महिनों तक खाने से तुतलाना ठीक हो जाता है। साथ में धीरे-धीरे बोलने का अभ्यास करना चाहिए। १० बादाम की गिरी व १० काली मिर्च बहुत बारीक पीसकर मिश्री मिलाकर चाटने से तुतलाना ठीक होता है।

बादाम का शर्बत, हलुवे व पाक के रूप में बहुत प्रयोग किया जाता है। पतंजलि व अन्य कई कम्पनियों का बादाम पाक बाजार में उपलब्ध है। मस्तिष्क व शारीरिक शक्ति वर्धनार्थ इसका प्रयोग गोदुग्ध के साथ कर सकते हैं।

अतः सर्दी के मौसम में अपनी शक्ति, सामर्थ्य व रोगानुसार बादाम का सेवन कर लाभ उठावें।

लेखक- वेदमित्र आर्य
सेवानिवृत्त चिकित्साधिकारी, आयुर्वेद विभाग, राजस्थान

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री वी. एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर, श्रीमती कमलकान्ता सहगल; पंचकूला, श्री अम्बालाल सनाढ्य; उदयपुर, श्री भँवर लाल आर्य; उदयपुर, श्री वेलजी धनजी भाई; महाराष्ट्र, श्री सज्जनसिंह कोठारी; जयपुर, श्री चेतन प्रकाश आर्य; जोधपुर, ठाकुर जितेन्द्र पाल सिंह; अलीगढ़, श्री घनश्याम शर्मा; जयपुर, श्री मानसिंह चौहान; डूंगरपुर, श्री अजय कुमार गोयल; पानीपत, श्री रामजीवन मिश्र; जयपुर, श्रीमती ममता आर्या; नई दिल्ली, श्री यश आर्य; कोलकाता

कथा सरित

दो वर्ष आगरा में निवास करने के पश्चात् स्वामी दयानन्द ग्वालियर के लिए प्रस्थान कर गए। यहाँ एक अजीब स्थिति उत्पन्न हो गई। ग्वालियर नरेश महाराज संयाजी राव सिंधिया ने ग्वालियर में १०८ भागवत पाठ का आयोजन कर रखा था और इसके लिए बड़ी जोर-शोर से तैयारियाँ की जा रही थीं। अनेक स्थानों से बड़े-बड़े पण्डितों को बुलाया जा रहा था तो पूरे नगर में एक धूम सी मची हुई थी, जिसका केन्द्र बिन्दु यह भागवत पाठ आयोजन था।

अब यह ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता कि यह केवल संयोग था अथवा भागवत होने के समाचार सुनने के बाद ही दयानन्द ने ग्वालियर जाने का विचार इस निमित्त से बनाया कि भागवती पण्डित जो वहाँ मिलेंगे उनसे शास्त्रार्थ का अवसर प्राप्त हो जाएगा। जो भी हो सन् १८६४ के अक्टूबर नवम्बर के मध्य स्वामी दयानन्द ग्वालियर जा पहुँचे।

ग्वालियर पहुँचकर स्वामी दयानन्द महारुद्र मोटेश्वर महादेव के मन्दिर में ठहरे। यद्यपि तब तक स्वामी दयानन्द की ख्याति उतनी नहीं फैली थी पर फिर भी लोग उनके नाम से परिचित होने लगे थे। स्वामी जी ने यहाँ प्रयास भी किया कि भागवत पर चर्चा हो सके परन्तु यह हो ना पाया। आपने कई बार देखा होगा कि अपनी हार के डर से प्रसिद्ध लोग अपनी पहचान छुपा करके सामने वाले के विद्या बल का परिचय लेने जाते हैं। ऐसा ही आचार्य अनुमन्ताचार्य किया करते थे। वे स्वामी जी से शास्त्र चर्चा करने तो आया करते थे, परन्तु एक साधारण मनुष्य के वेश में, अपना परिचय छुपा कर।

इनके बारे में स्वामी दयानन्द ने अपने आत्म चरित्र में लिखा है, 'ग्वालियर में अनुमन्ताचार्य नामक एक माध्व शास्त्रालाप सुनने के लिए मेरे पास प्रायः आया करते थे और जब कभी कोई अशुद्ध शब्द मेरे मुख से निकल जाता था तो वह उसी क्षण मुझे बता दिया करते थे। मैंने उनसे बहुत बार पूछा कि आप कौन हैं और किस पद पर नियत हैं? परन्तु वे सदा यही कह दिया करते थे कि मैं एक साधारण कारकून हूँ और कुछ नहीं। मैंने जो कुछ सीखा है लोगों से सुनकर सीखा है। एक दिन व्याख्यान में तिलक आदि का खण्डन करते हुए मैंने कहा कि यदि ललाट पर एक रेखा खींचने से वैष्णव जन को मोक्ष मिल जाता है तो सारे मुख को काला करने से तो उन्हें मोक्ष की अपेक्षा भी कोई उच्चतर वस्तु मिल सकती है। यह सुनकर वे बड़े रुष्ट हुए और मेरे पास से चले गए। पीछे अनुसन्धान करने पर मुझे मालूम हुआ कि वह अनुमन्ताचार्य थे।'

ग्वालियर प्रवास के दौरान यह बात भी सामने आती है कि प्रातः और सायं सूर्य को अर्घ्य देना स्वामी जी महाराज की दिनचर्या में सम्मिलित था। वह इस समय शिव सहस्त्रनाम का पाठ भी करते थे।

कहा जाता है कि राज्य में यह भागवत का जो आयोजन होने जा रहा था उससे पूर्व किसी ने स्वामी जी से उसकी चर्चा करके इष्ट प्राप्ति की बात कही तो स्वामी जी ने अनायास कह दिया कि इससे राज्य का अनिष्ट ही होगा इष्ट नहीं होगा और संयोग से यह भविष्यवाणी भी पूरी हो गई। क्योंकि महारानी के ५ मास के गर्भ का पात हो गया और ५ वर्षीय राजकुमार का देहान्त हो गया।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि दयानन्द भागवत का खण्डन करते हैं यह बात कोई छुपी नहीं रही। यह बात महाराज के कानों तक भी पहुँची। महाराजा ने पण्डित विष्णु दीक्षित को स्वामी जी के पास भेज कर भागवत सप्ताह बँचवाने का माहात्म्य पूछा। दयानन्द ने हँस कर कह दिया कि सिवाय दुःख और क्लेश के कोई फल नहीं होगा। परन्तु बड़ी बात यह है कि महाराज नाराज अवश्य हुए परन्तु उन्होंने प्रकट में कोई नाराजगी को प्रकट नहीं किया और यही कह दिया कि अब सब तैयारी हो चुकी है, इसलिए अब हम इस कार्य को नहीं रोक सकते। उन्होंने विद्वानों के कहने पर स्वामी दयानन्द को भी आमंत्रित किया परन्तु यह आमंत्रण स्वामी जी ने स्वीकार नहीं किया।

प्रस्तुति- नवनीत आर्य
नवलखा महल, उदयपुर

महर्षि दयानन्द

जब स्वदेशी शब्द दर्शन-योग्य, केवल कोष में था,
और हर पुरुषार्थ का अवसान, चिर-संतोष में था।
शान्त-शीतल हो चुकी थी, जब तरुण-विद्रोह-ज्वाला,
जब विदेशी राजसत्ता, कण्ठ में थी विजय माला।
दिव्य अपराजेय भारत-शक्ति ने तब जो पुकारा,
युग-प्रवर्तक, प्रथम निस्सन्देह वह स्वर था तुम्हारा।।
साधना सम्पूर्ण युग की मूर्त्त पुंजीभूत होकर
आ गई मानो, तुम्हारे रूप में अवधूत होकर
कर गए आचार्य शंकर रिक्त जो इतिहास-काया
धर धुरी युग धर्म की तुमने उसे सार्थक बनाया
मुड़ चली सावेग आर्यावर्त्त की जो प्राण-धारा,
हे अमर ऋषि, जागरण-उद्घोष था उनमें तुम्हारा।।

कर दिया तुमने प्रकाशित वेद को, चिर-लुप्त जो था
दे दिया अधिकार जन-जन को मनन का, गुप्त जो था
खण्ड कर पाखण्डियों को, पोप-लीला ध्वस्त कर दी
एक विद्युत्-शक्ति सारे देश में जो जीवन्त भर दी
आहिमाचल-सेतु जो गूँजा कभी उन्मुक्ति नारा,
क्रान्ति-कानन-केसरी, वह मेघ-गर्जन था तुम्हारा।।
तुम पराजित जाति के नव चेतना के अग्र गायक
पद्-दलित अभिमान की प्रतिशोध-झंझा के विनायक
कुसंस्कारों में छिड़े संघर्ष के निर्द्वन्द्व योद्धा
रक्त की ऊर्जा अजय, तारुण्य के निर्भय पुरोधा
हो गया बलिदान पावन जो पतित का बन सहारा,
ब्रह्मचर्यानल-प्रदीपित वज्र-तन वह था तुम्हारा।।
आर्य-संस्कृति और वैदिक सभ्यता के तुम विधाता
एक ईश्वर, एक धार्मिक ग्रन्थ के शुचि मन्त्र-दाता
काल-कर को तुम सुमण्डित कर गए कोदण्ड बनकर
जब भविष्यत् का चला आग्नेय शर मार्तण्ड बनकर
हिन्द, हिन्दी और हिन्दू जाति का चमका सितारा,
सर्वदा शुभ नाम उसमें है जुड़ा पहले तुम्हारा।।
हे विमल स्वामी, परम तत्त्वज्ञ मुनि, ब्रह्मात्म-ज्ञानी
आर्य संन्यासी, सुधारक, गुरु दयानन्दभिधानी
राजनीतिक दासता से मुक्त हैं भारत निवासी
चेतना राष्ट्रीय लेकिन आज भी है देवदासी
स्वप्न भारत-भारती का है अधूरा ही हमारा,
देश के सिर पर चढ़ा है आज भी ऋषि, ऋण तुम्हारा।।

❑❑❑

कवि- श्री आर.सी.प्रसाद सिंह

समाचार

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (NMCC) उदयपुर में मनाया अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस

दिनांक २७ सितम्बर २०२३ को अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन दिवस के उपलक्ष में पर्यटकों को भारतीय संस्कृति का महत्त्व समझाने हेतु जो भव्य प्रकल्प नवलखा महल में तैयार किया गया है, उसके प्रचार-प्रसार के सन्दर्भ में उदयपुर के होटल व्यवसाइयों के साथ एक संगोष्ठी आयोजित कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचारों को सम्प्रेषित करने का प्रयास किया गया। न्यास अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने बताया कि महर्षि दयानन्द की २००वीं जयन्ती के अवसर पर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के अनेकों कार्यक्रम पूरे विश्व में किये जा रहे हैं। स्थाई रूप से पर्यटकों और विशेष रूप से विद्यार्थियों तक यह सन्देश पहुँचता रहे इसके लिए गुलाब बाग के अन्दर अवस्थित नवलखा महल को भव्य स्वरूप दिया गया है और उसके माध्यम से उन उदात्त मूल्यों को जो कि आज विस्मृत हो गए हैं यहाँ से सम्प्रेषित किया जा रहा है।

वैदिक संस्कृति एवं महापुरुषों के योगदान को स्मृत करने हेतु आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा का भी यहाँ निर्माण किया गया है। उक्त प्रकल्पों का अवलोकन करने उदयपुर होटल एसोसिएशन के पदाधिकारी नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र पधारे जहाँ उन्होंने यहाँ से संचालित की जा रही

विभिन्न गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इस अवसर पर उदयपुर होटल एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री राजेश अग्रवाल ने कहा कि यहाँ जो प्रकल्प तैयार किए गए हैं ऐसे प्रकल्प उन्होंने कहीं भी नहीं देखे हैं। इसके लिए मैं यहाँ श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य एवं उनकी टीम को शुभकामनाएँ सम्प्रेषित करता हूँ तथा नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र की निरन्तर उन्नति की ईश्वर से कामना करता हूँ।

इस अवसर पर नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र युवा वाहिनी की संयोजक श्रीमती ऋचा पीयूष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के कार्यालय मंत्री श्री भँवर लाल गर्ग, पुरोहित श्री नवनीत आर्य, श्री देवीलाल, श्री लक्ष्मण, श्रीमती दुर्गा, श्री विशाल, श्री सिद्धम, श्री दिव्येश तथा न्यास के अन्य कार्यकर्त्ता भी उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम का आयोजन नवलखा महल की युवा इकाई NMCC YOUTH द्वारा किया गया। जिसकी संयोजक श्रीमती ऋचा पीयूष ने होटल व्यवसाइयों से निवेदन किया कि NMCC की प्रवृत्ति व्यावसायिक नहीं है, इसका उद्देश्य जन-जन तक भूली-बिसरी भारतीय मनीषा को सम्प्रेषित करना है, अतः उनके यहाँ रुकने वाले पर्यटकों तक इस प्रकल्प की जानकारी देने की अपेक्षा रखते हैं। NMCC YOUTH के अन्य सदस्य जयेश, सुकृत मेहरा, भाग्यश्री शर्मा, उषा चौहान, आदर्श गर्ग, शोभित मित्तल आदि के साथ-साथ न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य, संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

विश्व पर्यटन दिवस के अवसर पर अपनी सोच को प्रर्दशित करने के लिए जागृति विद्या निकेतन विद्यालय को भी यहाँ आमंत्रित किया गया था, वहाँ से अध्यापकों सहित लगभग ८० विद्यार्थियों ने नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र का अवलोकन किया। - भँवर लाल गर्ग; कार्यालय मंत्री-न्यास

राष्ट्रपति जी को वैदिक साहित्य भेंट

नर्मदापुरम् के वैदिक प्रवक्ता आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने आर्यजनो के एक शिष्टमण्डल के साथ मॉरीशस के राष्ट्रपति भवन जाकर मॉरीशस के महामहिम राष्ट्रपति श्री पृथ्वीराज सिंह रूपन जी से १८ अगस्त २०२३ को मुलाकात की और उनको हिन्दी व अंग्रेजी मे सत्यार्थप्रकाश व मनुस्मृति व हिन्दी में अन्य आध्यात्मिक साहित्य भेंट किया और लगभग ४५ मिनट की मुलाकात चली।

उसमें देश की प्रथम महिला उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संयुक्ता रूपन जी पूरे समय उपस्थित रहीं। महामहिम राष्ट्रपति जी ने आचार्य जी से समाज में फैली हुई बुराइयों के लिए आर्यों को और अधिक कार्य करने के लिए आग्रह किया और मनुस्मृति व वेदों के बारे में विचार विमर्श किया।

सायंकाल भारतीय उच्चायुक्त श्रीमती नन्दिनी सिंगला जी से उनके कार्यालय में जाकर मुलाकात की और उनको भी वैदिक साहित्य भेंट किया। लगभग १ घण्टे तक उन्होंने भी वैदिक सिद्धान्तों के बारे में जिज्ञासा सहित विमर्श किया।

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी आजकल मॉरीशस की यात्रा पर हैं उनके प्रवचन दूरदर्शन, रेडियो एवं अनेक धार्मिक संस्थाओं में हो रहे हैं।

प्रकाश जी श्रीमाली को हीरक जन्म जयन्ती की बधाई।

उदयपुर में आर्य समाज पिछोली के प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र श्रीमाली जी के यहाँ उनके ७५ वर्ष पूर्ण करने के अवसर पर आयोजित वेद पारायण यज्ञ के कार्यक्रम में वेदपाठी के रूप में आर्ष गुरुकुल,

नजीबाबाद की ब्रह्मचारिणियाँ उदयपुर पधारीं। पंच दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मा आर्ष गुरुकुल मलारनाचौड़ के अधिष्ठाता आचार्य सोमदेव के सान्निध्य में भव्य रूप यह यज्ञ दिनांक ११ अक्तूबर से १५ अक्तूबर तक श्रीमाली जी के घर पर सम्पन्न हुआ। श्रीमाली जी को बहुत-बहुत बधाइ। - भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा आयोजित विशाल आर्य महासम्मेलन भव्यता के साथ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में आर्य प्रतिनिधि सभा; राजस्थान द्वारा दिनांक २३ एवं २४ सितम्बर २०२३ को जयपुर महानगर में अवस्थित विश्वविद्यालय राजस्थान महाविद्यालय के खेल मैदान पर विशाल आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ। दो दिन के इस सम्मेलन में हजारों आर्य सज्जनों ने भाग लिया। सभा मन्त्री जीववर्धन शास्त्री ने बताया कि राजस्थान प्रान्त में विगत चालीस वर्षों से इस प्रकार का सम्मेलन आयोजित नही हुआ था, आर्य समाजों में नवीन ऊर्जा के संचार करने हेतु बडे सम्मेलनों की महती आवश्यकता है।

सम्मेलन के प्रथम दिवस प्रातः ७:०० बजे २०० कुण्डीय यज्ञ एवं २०० बालिकाओं का यज्ञोपवीत संस्कार विश्ववारा कन्या गुरुकुल; रुडकी की आचार्या पद्मश्री सुकामा जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। ओ३म् ध्वजारोहण एम.डी.एच के चेयरमैन महाशय श्री राजीव गुलाटी जी एवं

श्रीमती ज्योति गुलाटी जी के कर कमलों से द्वारा हुआ।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि आर्यसमाज के विश्वविश्रुत विद्वान् गुजरात राज्य के महामहिम राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत थे। इस अवसर पर आर्यन ग्रुप के चेयरमेन कैप्टेन श्री रुद्रसेन, डॉलर ग्रुप के चेयरमैन श्री दीनदयाल गुप्त, प्रसिद्ध समाज सेवी एवं उद्योगपति श्री विजय शर्मा, राजस्थान के पूर्व लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी, अमेरिका से पधारे डॉ. रमेश गुप्ता, सर्वेभवन्तु सुखिनः ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री जितेन्द्र भाटिया, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री किशन लाल गहलोत, मन्त्री श्री जीववर्धन शास्त्री, कोषाध्यक्ष जयसिंह गहलोत, हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राधाकिशन एवं श्री राजीव गुलाटी तथा श्रीमती ज्योति गुलाटी मंचासीन अतिथियों में सम्मिलित थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता एमडीएच के चेयरमैन महाशय श्री राजीव गुलाटी ने की।

'महर्षि की मानवता को देन' विषयक सत्र की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने की। मुख्य अतिथि डॉलर ग्रुप के चेयरमैन श्री दीनदयाल गुप्त, विशिष्ट अतिथि श्री विजय शर्मा थे। सत्र के मुख्य वक्ता आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक रहे। सत्र में वनवासियों के प्रतिनिधि श्री देवीलाल जी को सम्मानित किया गया। सत्र संयोजन डॉ. मोक्षराज आर्य द्वारा किया गया।

सायंकालीन सत्र में आर्यवीर दल राजस्थान द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं शक्ति प्रदर्शन किया गया। देश-देशान्तर में आर्यसमाज नामक सत्र में डॉ. रमेश गुप्ता; अमेरिका, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य एवं सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल; उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने अपने विचार व्यक्त किये।

अन्तिम सत्र में सम्मान समारोह में सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत, पुस्तकाध्यक्ष डॉ. मोक्षराज, प्रो. सन्दीपन आर्य, अशोक कुमार शर्मा, डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, नरदेव आर्य, बलवन्त निडर, अशोक आर्य केकड़ी, रवि चड्ढा एवं सभा व अन्तरंग पदाधिकारी एवं सदस्यों ने भारत के सभी प्रान्तों से पधारे प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों का सम्मान किया

गया। असम, हरियाणा, दिल्ली एवं छतीसगढ़ की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सत्र का संयोजन सभा मन्त्री जीववर्धन शास्त्री ने किया। सम्मेलन के द्वितीय दिवस गुरुकुल आबू पर्वत के आचार्य ओमप्रकाश जी के बह्मत्व में २०० बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ।

मंथन नामक सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक आर्य; उदयपुर, मुख्य अतिथि मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री प्रकाश आर्य रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व मन्त्री प्रो. सुधीर कुमार शर्मा, आचार्य आर्य नरेश, आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा, श्री प्रदीप आर्य; अलवर, आदि अनेक विद्वानों ने इस सत्र में विचार व्यक्त किये। सत्र का संयोजन आर्य समाज मोतीकटला जयपुर के प्रधान एवं प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अशोक कुमार शर्मा ने किया। समस्त कार्यकर्त्ताओं, दैनिक याज्ञिकों, संन्यासियों, वानप्रस्थियों, आदिवासियों से सम्पन्न मंच पर कार्यक्रम का सत्रावसान हुआ।

सभा प्रधान श्री किशनलाल गहलोत, आर्य समाज भीलवाड़ा के प्रधान श्री विजय शर्मा एवं श्रीमती किरण शर्मा द्वारा ध्वजावतरण कर सम्मेलन के समापन की घोषणा की गई।

श्रीमान् अशोक जी आर्य को आर्य समाज एवं शिक्षा के क्षेत्र में नवलखा महल सांस्कृतिक केन्द्र (NMCC) के माध्यम से अद्वितीय कार्य करने हेतु वरिष्ठ नागरिक परिषद्, उदयुपर द्वारा सम्मानित होने पर हम सभी को गर्व की अनुभूति हो रही है। प्रभु से प्रार्थना है कि श्री अशोक आर्य जी को आयु एवं वो शक्ति प्रदान करें कि वो दयानन्द के सपनों को साकार करने में अपना अत्यधिक योदान दे सकें।

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
Bigboss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at flipkart snapdeal amazon.in Myntra
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 November-2023 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2021-2023

मत फिरो पृथिवी पर झगड़ा करते।। मं. २। सि. ८। सू. ७। आ. ७४

समीक्षा- यह बात तो अच्छी है परन्तु इससे विपरीत दूसरे स्थानों में जिहाद करना और काफ़िरों को मारना भी लिखा है, अब कहो यह पूर्वापर विरुद्ध नहीं है?

सत्यार्थ प्रकाश, चतुर्दश समुल्लास पृष्ठ ५४५

स्वत्वाधिकारी, श्रीमहर्यानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा निदेशक- मुकेश चौधरी, चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित प्रेषण कार्यालय- श्रीमहर्यानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर